ISSN 2349-6614

अप्रैल 2024

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

लोकतंत्र के महापर्व में मतदान से न चूकें

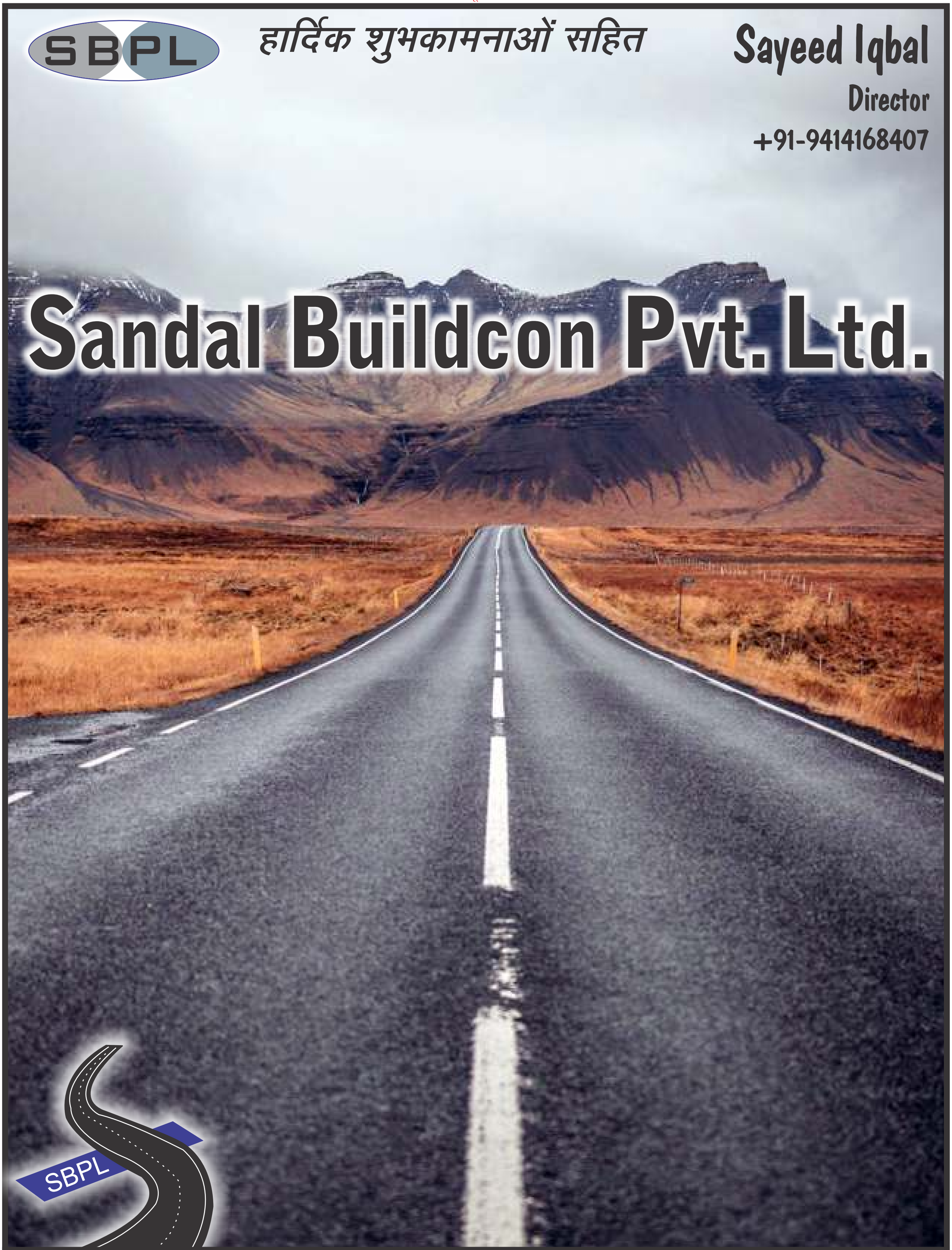

Plot No. 19-H Subcity Center, Udaipur (Raj.)
Ph.: 0294-2482407   Email: sbpl786@gmail.com

अप्रेल 2024
वर्ष 21 अंक 12

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

महावीर जयंती और चेटीचंड की हार्दिक शुभकामनाएं

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

अंदर के पृष्ठों पर...

मिशन गगनयान

भारत का मानव गगनयान वर्ष के अंत तक प्रक्षेपित
पेज 08

चुनाव सुधार

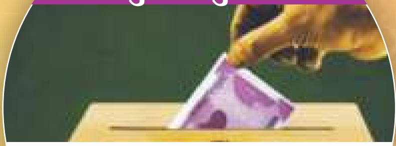

चुनावी बॉंड पर रोक ही पर्याप्त नहीं, बहुत कुछ शेष
पेज 12

ध्वनि प्रदूषण

वाहनों के शोर में कम हो रही इंसानों की उम्र
पेज 22

वास्तु

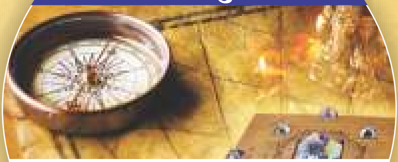

सही दिशा में लगाएं बिजली के उपकरण
पेज 30

नमन

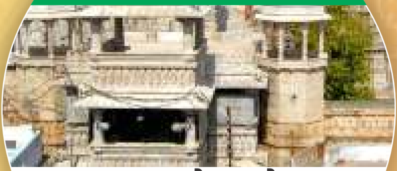

संयम तप के उपदेशक तीर्थंकर ऋषभदेव
पेज 36

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

ST. MATTHEW'S
SR. SEC. SCHOOL
ADMISSION OPEN
NURSERY TO XII
(ARTS, SCIENCE, COMMERCE)
A LIGHT TO THE NATION
Affiliated to CBSE
OUR FEATURES
Academic Excellence
Expert Science & Commerce Faculty
Personalised Care
Enrichment Programmes
Scholarship for Meritorious Students
Required : Dance Teacher
OPP. SANJAY PARK, RANI ROAD, UDAIPUR, PHONE: +91-294-2433184 | www.stmatthews.in

जोरदार लोकेशन पर UDA प्लान का शुभारंभ
अयोध्या सुर्यम
आवासीय प्लॉट्स • विला • रॉ-हाउसेज
तुरंत पजेशन • तुरंत रजिस्ट्री • रेडी निर्माण स्वीकृति • तुरंत बिजली कनेक्शन • बैंक लोन सुविधा
साईट: डबोक चौराहा, बजाज नगर, मावली रोड़
SINCE 1985
गुलशन प्रोपर्टीज
94141 60983 / 88242 65233
92692 00200

अधूरा काम पूर्ण, सीएए लागू

लगभग चार वर्ष की प्रतीक्षा के बाद केंद्र सरकार द्वारा लागू नागरिकता (संशोधन) अधिनियम अर्थात सीएए देश भर में अपने लोगों की नागरिकता सुनिश्चित करने की दिशा में बढ़ चला है। इस नए कानून का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि पड़ौसी पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान से भारत में आने वाले हिंदू, सिख, ईसाई व अन्य धर्म के लोगों को सहजता से नागरिकता हासिल हो जाएगी।

दरअसल, सीएए एक ऐसा मोर्चा है, जिसे लेकर केंद्र सरकार की आलोचना हो रही थी। सीएए का विरोध करने वाले ज्यादातर लोग शांत थे और अनेक लोग सरकार की मंशा पर सवाल उठा रहे थे। वस्तुत: में 11 दिसंबर, 2019 को सीएए संसद में पारित हो गया था, और कुछ ही घंटों में कानून को अधिसूचित भी कर दिया गया था, पर इसके लिए नियम तय नहीं हुए थे। इसके लिए सरकार लगातार समय ले रही थी। इस वजह से उसकी आलोचना भी हो रही थी। बहरहाल, नियम न तय होने से आगे नई लोकसभा में तकनीकी परेशानियां आ सकती थीं, अत: केंद्र सरकार ने चुनाव से ठीक पहले इस कार्य को अंजाम देकर एक तरह से अपना ही अधूरा काम पूरा किया है।

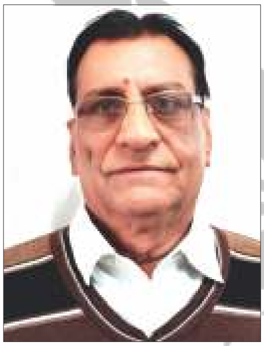

सीएए में 31 दिसंबर, 2014 से पहले अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश से मजहबी कारणों से प्रताड़ित होकर भारत आए अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने का प्रावधान है। वर्तमान अफगानिस्तान सहस्त्राब्दि पहले हिंदू-बौद्ध दर्शन का एक संपन्न केंद्र था। कालांतर में जबरन मतांतरण के कारण 1970 के दशक में यहां हिंदू-सिखों की संख्या घटकर लगभग सात लाख हो गई और अब तालिबानी राज में तो नगण्य है। वहीं विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) की कुल आबादी में हिंदू-बौद्ध अनुपात 28-30 प्रतिशत और पश्चिमी पाकिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान) की तत्कालीन जनसंख्या में हिंदू-सिखों का योग 15-16 प्रतिशत था। वह आज घटकर क्रमश: 8-9 प्रतिशत और दो प्रतिशत से भी कम रह गया है। भारत के नेता बार-बार कहते रहे कि पाकिस्तान बनने के बाद मजहब आधारित उत्पीड़न नहीं होगा। इसलिए उन्होंने संविधान-निर्माता बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के मजहब के आधार पर जनसंख्या की पूर्ण अदला-बदली के सुझाव को अस्वीकार कर दिया। मुस्लिम लीग के नेताओं ने भी सब्जबाग दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना ने 11 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान संविधान सभा में कहा था- 'पाकिस्तान में हर व्यक्ति मंदिर और मस्जिद या फिर अन्य किसी पूजास्थल में जाने के लिए स्वतंत्र होगा।' लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ और इन तीनों देशों में अल्पसंख्यक प्रताड़ित होते रहे। सीएए के प्रति आशंका की यदि कोई वजह हैं, तो राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) है। यह विवादित इसलिए बन गया, क्योंकि 2003 में जिस संशोधन के जरिये इसे अधिकृत किया गया, उसमें यह स्पष्ट कहा गया है कि हर भारतीय का नाम इस रजिस्टर में होना चाहिए। सैद्धांतिक रूप से इसमें कोई दिक्कत नहीं है। ऐसा होना भी चाहिए। मगर इसके क्रियान्वयन में कुछ व्यावहारिक मुश्किलें हैं, जैसे- इसमें स्थानीय प्रशासन को रजिस्टर में नाम दर्ज कराने के लिए अधिकृत किया गया है। वह चाहे तो किसी का नाम इसमें दर्ज कर सकता है और किसी का नाम काट सकता है। इसी कारण मुस्लिमों में कुछ शंकाएं हैं। उनको लगता है कि उनका नाम जबरन इसमें से हटाया जा सकता है। हालांकि, विरोध के बाद एनआरसी को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है, लेकिन सीएए के लागू होने के बाद यह आशंका फिर से सिर उठाती नजर आ रही है। कहा जा रहा है कि सिर्फ प्रताड़ित होकर नहीं, कई बार अच्छे अवसर की तलाश में भी पड़ोसी देशों से लोग यहां आते हैं। ऐसे में, वहां से आए मुसलमानों को अब भेदभाव का सामना करना पड़ सकता है।

एक तर्क यह भी है कि धर्मनिरपेक्ष भारत में नागरिकता का फैसला किसी की आस्था के आधार पर नहीं होना चाहिए। बहरहाल, अपने देश में धर्म की राजनीति नई नहीं है, इसके पक्ष और विपक्ष में लगभग हर पार्टी राजनीतिक लाभ लेना चाहती है। बेशक, राजनीति से अलग होकर सोचना ज्यादा जरूरी है। जो मजबूर लोग पाकिस्तान या बांग्लादेश से भारत में आए हुए हैं, उनकी समस्याओं का समाधान देश के लिए प्राथमिकता होनी ही चाहिए। भूलना नहीं चाहिए, नागरिकता का तार्किक व मानवीय वितरण इस देश की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संस्कृति का अंग है।

बज गई रणभेरी

देश चुनावी रंग में सराबोर फैसला 4 जून को

543
सीटों के लिए मतदान होगा

97
करोड़ मतदाता इस बार वोट करेंगे, यह संख्या में विश्व में सबसे अधिक है

49
करोड़ से अधिक पुरुष और 47 करोड़ महिला मतदाता

पंकज कुमार शर्मा

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनावी महासमर का आगाज हो गया है। निर्वाचन आयोग ने आम चुनावों से जुड़ी तारीखों का ऐलान कर दिया है। 19 अप्रैल को पहले चरण और एक जून को आखिरी यानी सातवें चरण का मतदान होगा। नतीजे चार जून को आएंगे। इस चुनाव में हिंसा, रक्तपात, धनबल एवं दुष्प्रचार को रोकने के लिए अब तक की सबसे प्रभावी व्यवस्था बनाई गई है। चुनाव प्रक्रिया की शुरुआत 20 मार्च को पहली अधिसूचना के साथ हो गई।

यूपी-बिहार में हर चरण में वोट पड़ेंगे : यूपी, बिहार और पश्चिम बंगाल में सातों चरण में वोट पड़ेंगे। कर्नाटक, राजस्थान, त्रिपुरा और मणिपुर में दो चरण, छत्तीसगढ़, असम में तीन चरण जबकि झारखंड, ओडिशा, मध्यप्रदेश में चार चरण में मतदान होंगे। महाराष्ट्र और जम्मू-कश्मीर में पांच चरण में वोटिंग होगी। दिल्ली, उत्तराखंड समेत अन्य सभी 22 राज्यों में एक चरण में मतदान होंगे। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 में भी सात चरणों में मतदान हुआ था।

चार राज्यों के विधानसभा चुनाव भी: लोकसभा चुनाव के साथ चार राज्यों आंध्र प्रदेश, आडिशा, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में भी विधानसभा चुनाव होंगे। सिक्किम और अरुणाचल में मतगणना 4 जून की बजाय 2 जून को होगी। यानि इनके नतीजे लोकसभा चुनाव से दो दिन पहले ही आजाएंगे। क्योंकि इन विधान सभाओं का कार्यकाल 2 जून को समाप्त हो रहा है। शेष दो विधानसभाओं की मतगणना चार जून को होगी। आयोग के मुताबिक, आंध्र प्रदेश की सभी 175 सीटों पर एक चरण में 13 मई को मतदान होगा। वहीं, अरुणाचल प्रदेश की 60 सीटों के लिए 19 अप्रैल को मतदान होगा। मौजूदा विधानसभा का कार्यकाल दो जून को समाप्त हो रहा है। यहां पिछले चुनाव में भाजपा ने 41 सीटें, जद(यू) ने सात, एनपीपी ने पांच और कांग्रेस ने चार सीट पर जीत दर्ज की थी। सिक्किम विधानसभा के लिए एक चरण में मतदान होगा। राज्य की सभी 32 सीट के लिए 19 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे। वहीं, ओडिशा की 147

राजीव कुमार
मुख्य चुनाव आयुक्त

कहां कब मतदान

अरूणाचल प्रदेश	19 अप्रैल
सिक्किम	19 अप्रैल
आंध्र प्रदेश	13 मई
ओडिशा	13, 20, 25 मई, 01 जून

- 26 विधानसभा क्षेत्रों के लिए उपचुनाव भी होंगे।

चरण	तारीख	सीट	राज्य
1	19 अप्रैल	सीट 102	राज्य 21
2	26 अप्रैल	सीट 89	राज्य 13
3	07 मई	सीट 94	राज्य 12
4	13 मई	सीट 99	राज्य 10
5	20 मई	सीट 49	राज्य 08
6	25 मई	सीट 57	राज्य 07
7	01 जून	सीट 57	राज्य 08

विधानसभा सीटों के लिए चार चरणों में मतदान होंगे। 28 सीटों के लिए 13 मई, 35 सीटों के लिए 20 मई, 42 सीटों के लिए 25 मई और शेष बची 42 सीटों के लिए एक जून को वोट डाले जाएंगे। चुनाव आयोग के अनुसार सुरक्षा कारणों की वजह से जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव कराना मुमकिन नहीं है। लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया पूरी होने के तुरंत बाद ही जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।

इस बार चुनाव में नया क्या

- 85 वर्ष से ज्यादा उम्र के मतदाता घर से वोट डाल पाएंगे
- 40% से ज्यादा विकलांगता वाले वोटर भी घर से वोट डाल पाएंगे
- ड्रोन के जरिए अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर कड़ी निगरानी की जाएगी
- इस बार कार्बन फुट प्रिंट सबसे कम होगा।

राजस्थान : दो चरणों में मतदान

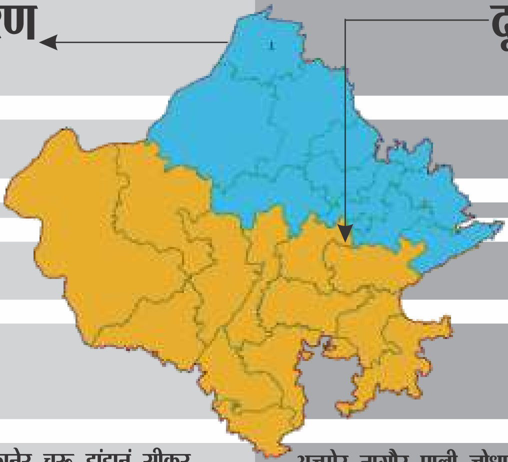

पहला चरण	दूसरा चरण
19 अप्रेल	26 अप्रेल
नामांकन	नामांकन
20 से 27 मार्च	28 से 4 अप्रैल
नामांकन पत्र	नामांकन पत्र
जांच	जांच
28 मार्च	5 अप्रैल
नाम वापसी	नाम वापसी
30 मार्च	8 अप्रैल
12 सीटों पर	13 सीटों पर
श्रीगंगानगर, बीकानेर, चुरू, झुंझुनूं, सीकर, जयपुर, ग्रामीण, जयपुर, अलवर, भरतपुर, करौली-धोलपुर, दौसा, टोंक, सवाई-माधोपुर	अजमेर, नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जालोर, बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा, कोटा-बूंदी, झालावाड़-बारां

मतदान संपन्न होने के बाद मतदान केंद्र पर कचरा नहीं होगा।

- आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत मिलने पर 100 मिनट के भीतर टीम पहुंचेगी।

बटन दबाएं, देश बनाए

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लोकपर्व की तारीखों का ऐलान हो गया है। इस चुनाव में सिर्फ पार्टियां या उनके प्रत्याशी नहीं जीतेंगे, वरन आप जब अपने वोट के लिए एक बटन दबाएंगे, उससे पूरे देश का लोकतंत्र जीतेगा। निष्पक्ष और निर्भय होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करें।............... प्रत्यूष परिवार

महावीर लाल जैन
डायरेक्टर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

विनोद जैन
डायरेक्टर

नवकार

नवकार स्टील
6, चौखला बाजार,
चित्तौड़ा मन्दिर के नीचे
भोपालवाड़ी, उदयपुर,
फोन : 0294 2420579

नवकार मेटल
7, भांग गली,
सूरजपोल अन्दर,
उदयपुर
फोन : 0294 2417354

डीलर : स्टील, पीतल, तांबा, एल्यूमीनियम बर्तन, गिफ्ट आईटम और कुकर पार्ट्स के होलसेल व रिटेल विक्रेता।

भारत का मानव गगनयान वर्ष के अंत तक प्रक्षेपित

इस वर्ष के अंत में भारत (इसरो) का पहला मानव गगनयान मिशन लांच करने का लक्ष्य रखा गया है। अंतरिक्ष उड़ान पर जाने वाले वायुसेना के चारों पायलट रूस में प्रशिक्षण लेने के बाद मिशन से संबंधित अन्य तैयारियों के लिए इस समय भी भारत में इसरो के निर्देशन में कठिन परिश्रम कर रहे हैं। यह मिशन तीन दिन का होगा।

अमित शर्मा

देश के पहले मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन गगनयान से करीब चालीस वर्ष बाद कोई भारतीय अंतरिक्ष की यात्रा करेगा। विशेषता यह होगी कि इस बार उलटी गिनती, समय और रॉकेट भी हमारा ही होगा। मिशन पर जो चार यात्री जाएंगे, वे हैं ग्रुप कैप्टन प्रसंथा बालकृष्णन नायर, अंगद प्रताप, अजीत कृष्णन और विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों जब इनसे मुलाकात की थी तो कहा था कि ये सिर्फ चार नाम या चार इंसान नहीं, बल्कि ऐसी शक्तियां हैं, जो देश के 1.4 अरब लोगों की आकांक्षाओं को अंतरिक्ष तक ले जाने वाली हैं।

रूस में प्रशिक्षण: भारत के इसरो और रूस की स्पेस एजेंसी रॉसकॉसमॉस के बीच जून 2019 में अंतरिक्ष यात्रियों के प्रशिक्षण के लिए करार हुआ था। इसके बाद इन यात्रियों को रूस के यूरी गागरिन कॉस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर में फरवरी 2020 से सितम्बर 2021 तक प्रशिक्षण दिया गया।

सीईएस सबसे खास: गगनयान मिशन का पहला परीक्षण क्रू एस्केप सिस्टम (सीईएस) सबसे खास है। जब यात्री 400 किमी ऊपर रहेंगे तो अनहोनी की दशा में सुरक्षित वापसी के लिए सीईएस का इस्तेमाल होगा।

दस हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे: इसरो के अनुसार यह मिशन तीन दिनों का होगा। गगनयान में बैठकर ही ये अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी के चारों ओर 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर चक्कर लगाएंगे। क्रू मॉड्यूल डबल दीवार वाला आधुनिक केबिन है, जिसमें कई प्रकार के नेविगेशन सिस्टम, हेल्थ सिस्टम, फूड स्टोरेज, टॉयलेट इत्यादि होंगे। इस पूरे मिशन पर 10 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे।

ग्रुप कैप्टन प्रसंथा बालकृष्णन नायर | ग्रुप कैप्टन अजीत कृष्णन | ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप | विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला

व्योममित्र भेजने की तैयारी: गगनयान मिशन में कुल तीन वाहन परीक्षण किए जाने हैं। पहला वाहन परीक्षण मिशन टीवी-डी1, दूसरा टीवी-डी 2 मिशन और तीसरा परीक्षण एलवीएम 3-जी 1 है। इसरो टीवी-डी 1 को सफलतापूर्वक संचालित कर लिया है। इसरो अंतरिक्ष में मानव से पहले व्योममित्र रोबोट को भेजेगा।

हजारों घंटे उड़ान के अनुभव: गगनयान मिशन के लिए कठोर प्रशिक्षण ले रहे वायुसेना के इन चारों पायलट को उड़ान भरने का दो से तीन हजार घंटे का लंबा अनुभव है। इनमें से दो को प्रतिष्ठित स्वोर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया जा चुका है। वायुसेना के मुताबिक पायलटों ने सुखोई 30, एमकेआई, मिग-21, मिग-29, हॉक, डॉर्नियर और एएन 32 जैसे विमान उड़ाए हैं।

गगनयान के यात्री

ग्रुप कैप्टन प्रसंथा नायर
जन्म : 26 अगस्त 1976
जन्मस्थान: पल्लकड़, केरल

केरल के पलक्कड़ जिले में जन्मे प्रशांत नायर एनडीए के पूर्व छात्र हैं। वायु सेना अकादमी में स्वोर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित है। 19 दिसम्बर 1998 को फाइटर स्ट्रीम में ज्वाइन किया था। वह कैट ए फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर और टेस्ट पायलट हैं। उनके पास तीन हजार घंटे की उड़ान का अनुभव है।

ग्रुप कैप्टन अजीत कृष्णन
जन्म : 19 अप्रैल 1982
जन्मस्थान: चेन्नई, तमिलनाडु

अजीत कृष्णन राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र हैं। उन्हें वायुसेना अकादमी में प्रेसिडेंट गोल्ड मेडल तथा स्वर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित हैं। 21 जून 2003 को भारतीय वायुसेना की फाइटर स्ट्रीम में योगदान दिया। उन्होंने सुखोई 30, मिग 21 डोर्नियर आदि कई विमान उड़ाए हैं।

ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप
जन्म :17 जुलाई 1982
जन्मस्थान : प्रयागराज, यूपी

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से पढ़ाई के बाद 18 दिसम्बर 2004 को भारतीय वायुसेना की फाइटर स्ट्रीम में नियुक्ति हुए। वे फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर और टेस्ट पायलट हैं और उनके पास लगभग 2000 घंटे की उड़ान का अनुभव है। ये भी डिफेंस सर्विस स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन के पूर्व छात्र रहे हैं।

विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला
जन्म : 10 अक्टूबर 1985
जन्मस्थान : लखनऊ, यूपी

17 जून 2006 को भारतीय वायुसेना की फाइटर स्ट्रीम में नियुक्त हुए। वे फाइटर कॉम्बैट लीडर और टेस्ट पायलट हैं, जिनके पास लगभग दो हजार घंटे की उड़ान का अनुभव है। उन्होंने सुखोई 30, मिग 29, जगुआर, हॉक, डोर्नियर समेत विभिन्न प्रकार के विमान उड़ाए हैं।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

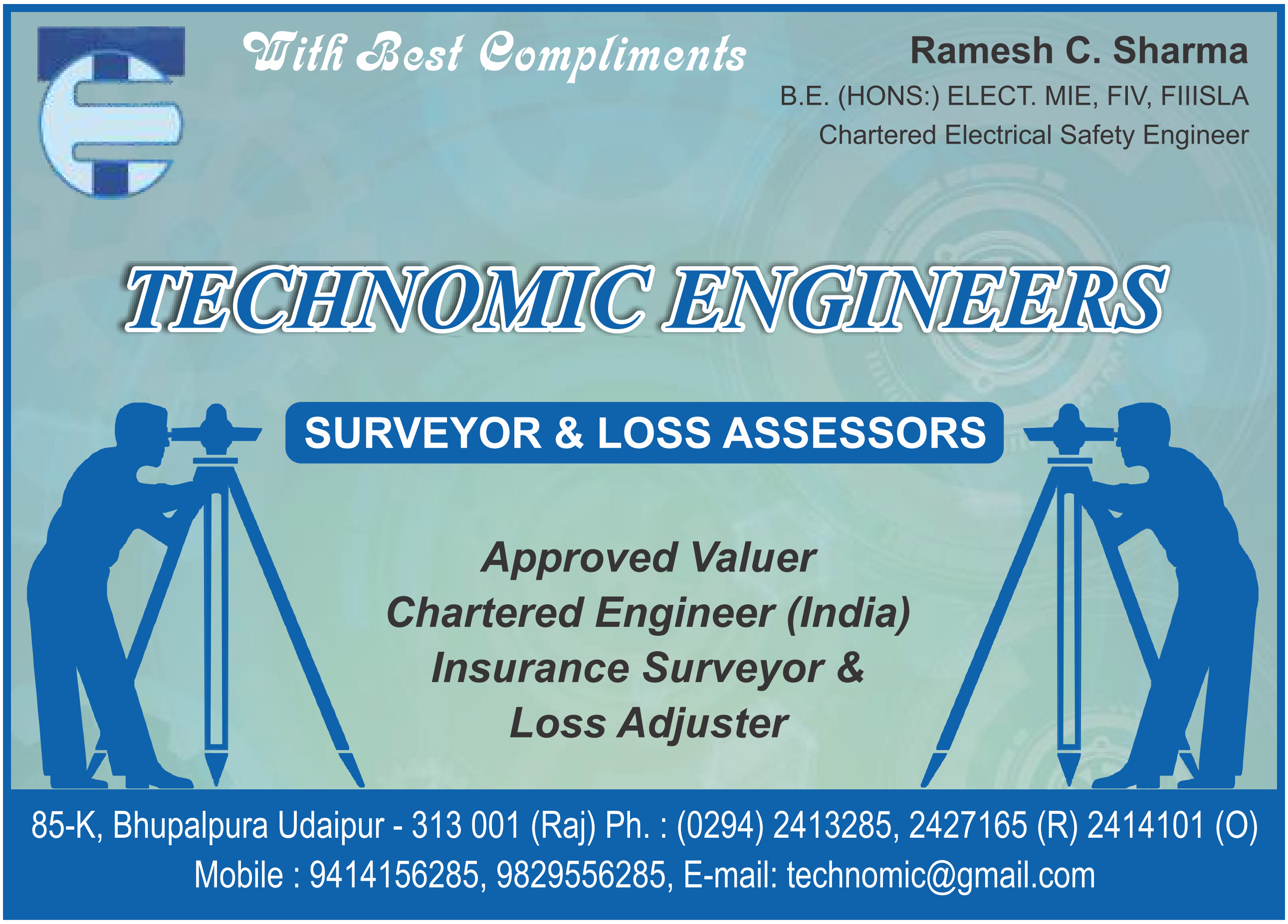

सामाजिक न्याय के आधार अम्बेडकर और गांधी

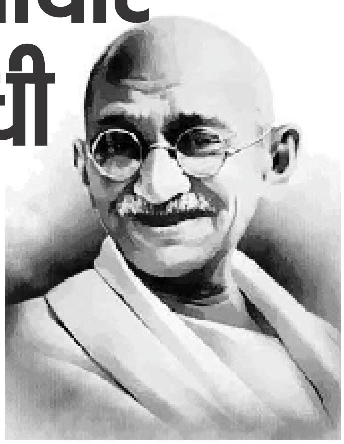

वेदव्यास

भारत में आज भी करोड़ों की संख्या में दलित गैर-बराबरी का जीवन जी रहे हैं तथा आरक्षण की वैतरणी पार करके भी सामाजिक-आर्थिक असमानता के नरक में ही पड़े हैं। यदि कोई सही और ईमानदार अंबेडकर के अनुयायी आज हैं, तो उन्हें यह सोचना चाहिए कि अंबेडकर और गांधी को नए भारत के समन्वय और सामाजिक न्याय का आधार कैसे बनाया जाए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामाजिक जीवन में महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर ही दो ऐसे विचार पुरुष हैं, जो आज भी सबसे अधिक प्रासंगिक हैं। कुछ प्रश्नों पर गांधी और अंबेडकर में गहरे मतभेद भी रहे, लेकिन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में ये दोनों जमीन-आसमान की तरह बुनियादी तौर से जुड़े हुए हैं। आज भी गांधी और अंबेडकर ही अपने समाज में सबसे अधिक उपेक्षित और अपमानित भी हैं, तो इन दोनों की मूर्तियां भी सबसे अधिक लगाई और तोड़ी जाती हैं। फर्क यही है कि गांधी की सत्य और अहिंसा को स्वतंत्र भारत की जनप्रतिनिधि सरकारों ने दरकिनार किया है और अंबेडकर के सामाजिक न्याय को भी उनके अनुयायियों ने ही सबसे पहले भुला दिया है। अहिंसा और सामाजिक न्याय, दोनों ही सत्य के बिना अधूरे हैं। आप मानें या न मानें-दरअसल सामाजिक न्याय, सत्य और अहिंसा ही हमारे लोकतंत्र में संविधान की आत्मा हैं और धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता इसी गणतंत्र की बीज संतानें हैं। दिक्कत तो यह है कि राज्य सत्ताओं की दलीय राजनीति ने हमारे सभी राष्ट्रीय महापुरुषों को और शाश्वत अध्यात्म के ज्ञान ऋषियों को अपनी चुनावी शतरंज में एक मोहरे की तरह खड़ा कर दिया है, लेकिन मन से यह राजनीति कभी गांधी और अंबेडकर को नहीं चाहती, क्योंकि विकास और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के भूमंडलीकरण में पहली हत्या सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय अर्थात् गांधी और अंबेडकर की ही होगी।

14 अप्रेलः डॉ. अंबेडकर जयंती विशेष

आज अंबेडकर को याद करते हुए हमें सोचना चाहिए कि जाति प्रथा ने हमारे इतिहास और पहचान को कलंकित कर रखा है, उसी जाति प्रथा (व्यवस्था) के विरोध में अंबेडकर ने अपना सब कुछ त्याग दिया था। केंद्र सरकार में विधि मंत्री के पद के साथ हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था, क्योंकि उन्हें हिंदू धर्म की चतुरवर्ग व्यवस्था नहीं भायी। सभी जानते हैं कि भारत का संविधान 1949 में स्वीकारा गया था, तब इसके लेखक और प्रारूपकार डॉ. भीमराव अंबेडकर ही थे और जिसकी यह प्रारंभिक पंक्तियां कि हम भारत के लोग यह शपथ लेते हैं कि न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा ही हमारे लोकतंत्र का जयघोष होगा, जैसी महाकविता के सर्जक हमारे अंबेडकर ही थे। मेरा तो ऐसा मानना है कि भारत का संविधान तो प्रत्येक भारतवासी को अवश्य पढ़ना चाहिए, क्योंकि एक नागरिक के लिए यह गीता, कुरान और बाइबल की तरह ही पवित्र और अनिवार्य है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर महार जाति के दलित माता-पिता की 14वीं संतान थे। तत्कालीन बड़ौदा के प्रगतिशील शासक सयाजीराव ने इस प्रतिभाशाली छात्र को 25 रुपए महीने की छात्रवृत्ति दी थी और उच्च अध्ययन के लिए विदेश में पढ़ने भिजवाया था। कहने-समझने की बात केवल यही है कि एक उच्च जाति के राजा ने भी जाति को नहीं, अपितु उसी गुण और ज्ञान को महत्व दिया था, जिसके लिए संत कबीर ने 700 साल पहले कहा था कि-जात न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान/मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।

अंबेडकर ने मनुष्य की पीड़ा और दर्द को समझा था और यही सत्य का आग्रह था, जो गांधी से सवाल करता था और मार्क्सवाद की हिंसा को नकार कर भगवान बुद्ध की अहिंसा से उन्हें जोड़ता था। सच बात तो यह है कि जिस तरह भारतीय समाज में जाति और धर्म ने विघटन बढ़ाया है, वैसे ही जाति व्यवस्था को समाप्त करने की जगह आरक्षण की जाति आधारित राजनीति ने अंबेडकर की सामाजिक परिवर्तन की विचार चेतना को सदैव नकारा है और इसी का यह प्रतिफल है कि तमिलनाडु से लेकर उत्तर प्रदेश तक रामास्वामी पेरियार और अंबेडकर ही सामाजिक न्याय के चुनावी महाभारत को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। पूरा भारतीय समाज विज्ञान और ज्ञान के इस युग में भी जातीय वैमनस्य, प्रभुसत्ता और संघर्ष के विग्रह में फंसा हुआ है। डॉ. अंबेडकर ने यही तो बताया कि-'हिंदू धर्म में नियमों के कठोर पालन का विधान है। यह कानून कोई विधिकारों ने नहीं बनाए हैं और जो जातीय संहिता बनी हुई है, वही पत्थर की लकीर है। अत: इस भेदभाव के अमानवीय धर्म को समाप्त किया जाना चाहिए, क्योंकि जाति-धर्म की असमानता को नष्ट करने का सामाजिक-आर्थिक न्याय का संघर्ष किसी भी तरह अधार्मिक नहीं है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

With Best Compliments

Paragon
The Mobile Shop

vivo oppo
Redmi 1S honor
NOKIA Connecting People
MOTOROLA
Jio
BlackBerry
mi
INTEX
GIONEE SMART PHONE
htc
SAMSUNG
lenovo. FOR THOSE WHO DO.
LAVA MOBILE PHONE
itel
micromax nothing like anything
SONY

and all other mobile trusted brands are available under one roof..

For More Detail Pls Contact

Paragon
The Mobile Shop

23, inside Udaipole Udaipur Contact No. 0294-2383373, 9829556439

चुनावी बॉंड पर रोक ही पर्याप्त नहीं, बहुत कुछ शेष

दुनिया के बड़े लोकतांत्रिक देशों में शायद भारत अकेला देश है, जहां चुनावी चंदे की कोई सीमा तक नहीं है और पार्टी के खर्चे पर भी किसी तरह की कोई रोक-टोक नहीं है। चंदे और खर्चे की हदबंदी किए बिना चुनावों में नोटबंदी की कल्पना नहीं की जा सकती। सुप्रीम कोर्ट ने भले ही चुनावी बॉन्ड पर रोक लगा दी हो, लेकिन चुनाव सुधार के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

विजय विद्रोही

ब्रिटेन में कोई भी दल चुनाव में एक सीट पर 30 हजार पाउंड (करीब 30 लाख रूपये) से ज्यादा खर्च नहीं कर सकता। इसी तरह, वहां कोई दानदाता (व्यक्ति हो या कंपनी) एक साल में साढ़े सात हजार पाउंड से ज्यादा का दान नहीं दे सकता। उससे ज्यादा दान देने पर उसकी पहचान को सार्वजनिक किया जाना जरूरी है। जर्मनी में अधिकतम चुनावी चंदे की सीमा दस हजार यूरो सालाना है। उससे ज्यादा चंदा देने पर पार्टी विशेष को पहचान बतानी पड़ती है। बहुत से अन्य देशों में छोटे दानदाताओं के नाम उजागर नहीं किए, जाते, लेकिन बड़े दानदाताओं की पहचान जरूरी है। कहा जाता है कि एक राजनेता कालेधन के जरिये ही विधानसभा या लोकसभा में पहुंचता है। इस समय हमारे देश में एक उम्मीदवार लोकसभा चुनाव में 75 से 90 लाख रूपये और विधानसभा चुनाव में 40 लाख रूपये खर्च कर सकता है। वैसे तो कागजों में उम्मीदवार इससे आधी रकम ही चुनावी खर्च के रूप में दिखाते हैं, लेकिन हकीकत बच्चा-बच्चा जानता है। ऐसे में, चुनाव आयोग को चुनावी खर्च सीमा बढ़ानी चाहिए और उसे महंगाई दर से भी जोड़ा जाना चाहिए। ऐसा होने पर भी कालेधन पर रोक लगने की गारंटी तो नहीं है, लेकिन कुछ हद तक अंकुश तो लगाया ही जा सकता है।

> **जिस देश में चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति सत्तारूढ़ दल की पसंद-नापसंद पर निर्भर हो, वहां चुनाव आयोग कैसे चुनावी चंदे की पारदर्शी व्यवस्था कर सकता है? इसके लिए जरूरी है कि चुनाव आयोग का अपना अलग सचिवालय हो, आयोग अपने हिसाब से नियुक्तियाँ कर सके, नौकरी के अपने स्वतंत्र नियम बना सके और उसका बजट अलग से हो। क्या इतनी आजादी कोई सियासी दल चुनावी आयोग को देने को तैयार होगा?**

दुनिया के बहुत से देशों में सार्वजनिक निधि से चुनाव करवाए जाते हैं। एक सुझाव दिया गया है कि चुनाव आयोग जनता के पैसों से चुनाव करवाए। क्राउड फंडिंग की तर्ज पर भारत के लोग या कंपनियां चुनाव फंड में योगदान करें। इससे जितना पैसा जमा हो, उतनी ही रकम भारत सरकार अपनी झोली से दे। फिर यह पैसा अलग-अलग दलों में बांटा जाए। पैसे का आवंटन पिछले लोकसभा चुनावों में मिले वोट और सीटों, उम्मीदवारों के खिलाफ दर्ज आपराधिक मामलों तथा वोटरों की संख्या के आधार पर किया जा सकता है। राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय दलों के लिए अलग-अलग व्यवस्था की जा सकती है। इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि चंदा देने वाला आम वोटर भी अपनी जिम्मेदारी समझेगा। उसे लगेगा कि सारी प्रक्रिया में वह खुद शामिल है और उसकी जेब का पैसा लगा है। इससे चुनाव में स्वच्छ छवि के लोग सामने आएंगे, नई पीढ़ी को मौका मिलेगा और इससे लोकतंत्र ही मजबूत होगा। यूरोप के हॉलैंड, नॉर्वे, स्वीडन जैसे देशों में यह प्रयोग सफलतापूर्वक चल रहा है। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एस. वाई. कुरैशी का सुझाव है कि राष्ट्रीय चुनाव कोष बनाया जा सकता है, जिसमें कॉरपोरेट जगत चंदा दे सकता है। फिर यह पैसा चुनाव आयोग अलग-अलग दलों के बीच बांट सकता है। वैसे बड़े उद्योगपतियों ने पहले ही कॉरपोरेट फंड बना रखा है, जिसके जरिये अलग-अलग दलों को चंदा दिया जाता रहा है। पिछले साल ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट में बताया गया कि भारी-भरकम चंदा देने वालों का सत्तारूढ़ दलों से जुड़ाव होता है और उन्हें मनचाहे लाभ मिलते हैं। जानकारों का कहना है कि चुनावी चंदे की सारी जानकारी समय-समय पर चुनाव आयोग को सामने लानी चाहिए। ऐसा होने पर वोटर को पता लग जाएगा कि किस दल को कौन-कौन चंदा दे रहा है। इस जानकारी के आधार पर वोटर पार्टी विशेष के प्रति अपनी राय बनाकर मतदान कर सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

वीरेंद्र कुमार डांगी
डायरेक्टर

रजनी डांगी

डांगी इण्डस्ट्रीज

सोप स्टोन पाउडर

डोलोमाइट

चाइना क्ले

केल्साइट पाउडर के निर्माता एवं माइनिंग

- पर्ल मिनरल्स एंड केमिकल्स
- डांगी माइनिंग प्राईवेट लिमिटेड
- नेनो क्ले एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड
- देवपुष्प माइनिंग इण्डस्ट्रीज, किच्छा

एफ-39 (ए) आई. टी. पार्क, रोड नं. 12, मादडी इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर 313 003
फोन : 9649203061/9672203061, ईमेल: pearlmin@rediffmail.com, dangiindustries@rediffmail.com

धर्म के मूर्तिमान रूप प्रभु श्रीराम

भारतीय संस्कृति का प्रमुख चेहरा श्रीराम हैं। उनकी जीवन गाथा 'रामायण' हमारी अमर परम्परा का आधार है। रामायण में श्री राम का आदर्श चरित्र अभिव्यक्त होने से यह भारतीय समाज की चेतना का महाकाव्य है।

शास्त्री कोसलेन्द्रदास

महात्मा गांधी जब रामराज्य की बात करते थे तो उसमें छिपा निहितार्थ गहरा था। रामराज्य यानी पारदर्शी राज्य। ऐसा राज्य जिसमें कोई दरिद्र, दुखी और दीन नहीं हो। रामायण में लिखा है कि रामराज्य में कोई बीमार नहीं होता था। पिता के सामने पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी। स्त्रियां पतिव्रता और सदा सुहागन होती थीं। लोग हृष्ट-पुष्ट और धार्मिक होते थे। स्वधर्म पर चलने वाली प्रजा केवल राजा से नहीं बल्कि परस्पर भी प्रेम करती थी। श्रीराम के राम में महामारी और अकाल नहीं होते थे। दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से प्रजा मुक्त थी।

रामायण में है तप

रामायण का संदेश है तप। सारी रामकथा तप को प्रतिष्ठित करती है, जिसमें मानवीय स्तर पर एक से एक करुणाजनक दृश्य और चेहरे उपस्थित होते हैं, जिनके भीतर सूर्य तप रहा है और उन्हें मधुमय बना रहा है। इन दृश्यों और पात्रों से गुंथा ग्रंथ रामायण है जो श्रीराम की अमर गाथा है।

शुचिता के सर्वश्रेष्ठ प्रतिमान

सर्वव्यापक, निरंजन निर्गुण और अजन्मे ब्रह्म ही प्रेम और भक्ति के वश होकर माता कौसल्या की गोद में उतरते हैं। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मध्याह में जन्मे श्रीराम जगत के प्रकाशक हैं। रामचरितमानस कहती है कि नवजात बालक राम को देखने सूर्य एक मास तक अपनी जगह से हिले ही नहीं, पूरा महीना एक दिन में बदल गया। उनका चरित अगाध गुणों का समुद्र है, जिसमें सारे ऋषि-योगी व भक्त-संत हंसरूप में विचरण करते हुए मोती चुनते हैं। राम मर्यादा, धर्म, उपकार सत्य, दृढ प्रतिज्ञा तथा चरित्र शुचिता के अनुपम प्रतिमान हैं। वे इतिहास के सबसे अधिक प्रकाशित तेजोमय महानक्षत्र, जिनके प्रकाश से सारे चर और अचर चमक रहे हैं।

मन, वचन और कर्म में एक

भागवत महापुराण के अनुसार श्रीराम ने अपना अवतार मनुष्य जाति को चरित्र-शिक्षण देने में लगाया। उनका पूरा अवतार काल माता-पिता, बंधु-बांधव, परिवार, राजा-प्रजा और नारी के प्रति सम्मान को प्रकट करता है। श्रीराम जो विचारते हैं, वह कहते हैं। जो कहते हैं, वह करते हैं। वे मन, वचन और कर्म में एकरूप हैं। कथन की अपेक्षा कर दिखाना, अधिक विश्वसनीय होता है। उनके जीवन के सत्य पर आधारित है। श्रीराम के चरित की यह विशेषता है कि वे एक ही बात बोलते हैं। एक ही बाण से शत्रुओं का नाश करते हैं और एकपत्नी व्रत धारण करते हैं। कैकेयी जब उन्हें कहती है कि राम, तुम निश्चित ही वन चले जाओगे ना ? तो वे माता कैकेयी से कहते हैं, राम दो बात नहीं बोलता माता। मैंने वन में जाने का जो वचन दिया, उसे मैं अवश्य ही पूरा करूंगा। भारत की संस्कृति को पहचानने वाला चेहरा श्रीराम का है। उनकी जीवनगाथा रामायण हमारी अमर परम्परा का आधार है। श्रीराम का जीवन चरित्र होने से रामायण आज तक भारतीय समाज की चेतना का महाकाव्य है। किसी भी पंथ, परंपरा, भाषा, राष्ट्र तथा संस्कृति में रामायण जैसा ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। भारत के हरेक नर-नारी को अपनी चरित्र के नायक-नायिका के रूप में देखने के लिए राम और सीता प्राप्त हैं। महर्षि वाल्मीकि की उद्धोषणा है कि श्रीराम धर्म के साक्षात विग्रह हैं।

तृष्णा में राम की जरूरत

मौजूदा समाज की स्थिति, तृष्णाएं और इच्छाएं बदल रही हैं। वैज्ञानिक आविष्कारों के जंगल में फंसे लोगों को उद्दाम भोग की संस्कृति मार रही है। फिर भी पुरातन वैदिक संस्कृति जीवित है तो भला इसका रहस्य क्या है? दुनिया की किसी जाति ने नारी के सतीत्व पर इतना जोर नहीं दिया, जितना हमारे पूर्वजों ने दिया। दुनिया की किसी धार्मिक परंपरा ने दाम्पत्य जीवन को लेकर महाकाव्य नहीं रचा जबकि हमारा स्वाभाविक इतिहास रामायण पवित्र दाम्पत्य जीवन का महाकाव्य है। अब जब पाश्चात्य संस्कृति हम पर बुरी तरह से हावी है, पाश्चात्यों का समृद्ध समाज ही हमारा आदर्श बन चुका है। ऐसी हालत में सोचे तो लगता है कि हमारी नाव डूबने से तभी बच सकेगी जब राम हमारे आदर्श हों। रामायण का आदर्श हमारा आदर्श हो। राम सिर्फ सीता के लिए और सीता सिर्फ राम के लिए है। उनके अवतार में काम का प्रलोभन और अवदमन दोनों ही नहीं है।

सगुण और निगुर्ण के मिलन बिंदु

श्रीराम न केवल सगुण भक्तिधारा के भक्तों के ही जीवनाधार हैं बल्कि निर्गुण धारा के संत भी अपना निर्गुण ब्रह्म राम में ही खोजते हैं। एक ओर जगद्गुरू रामानुजाचार्य, रामानंदाचार्य और गोस्वामी तुलसीदास सगुण धारा के संत, वहीं महात्मा कबीर के निर्गुणी मन से लेकर रैदास, धन्ना, नानक, दादू व रामचरण जैसे असंख्य भक्त राम को पाकर ही हमारे आराध्य व श्रद्धा के केंद्र आज तक बने हुए हैं। राम चरित का जादू है कि घर में संतान जन्में तो राम जन्म के गीत और विवाह हो तो वर-वधू में राम-सिया की जोड़ी के दर्शन तथा अंत में भी उन्हीं राम का नाम। उनका जीवन और नाम, दोनों भक्तों के जीवन का आधार हैं। जीवन के अंत में आसरा भी उसी राम नाम का।

निकुंज भट्ट, डायरेक्टर

0294-2410237, 94143 43555

शिव बर्तन भण्डार

● बिस्तर बर्तन, हलवाई व्यवस्था
● गीली दाल, काजू की पिसाई व्यवस्था
● कॉफी मशीन व एक्स्ट्रा ● काउन्टर की व्यवस्था
● पत्तल-दोने, डिस्पोजेबल आइटम ● नेपकिन फ्यूल के विक्रेता

सुथारवाड़ा, उत्तरी आयड़, उदयपुर (राज.)

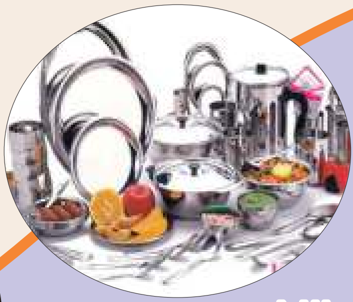

Nikunj Bhatt
+ 91941 416 3030

Shiv Bartan & Caterers

Sutharwara, North Ayad, Udaipur - 313 001, Raj. India

Tele/Fax : +91 294 241 0237
Email : shivbartancaterers1.getif.in
website : shivbartancaterers1.getit.in

जानलेवा न बन जाए कहीं गले और सिर का कैंसर

निधि गोयल

आधुनिक युग में हमारे दैनिक क्रियाकलापों के लिए सुख-सुविधाओं की कमी नहीं है। आज कोई भी कार्य आसान हो गया है। साथ ही बीमारियों में भी वृद्धि हुई है। यदि कैंसर की बात करें तो आजकल इसके रोगी काफी बढ़ गए हैं। इसमें भी गले और सिर के कैंसर में काफी बढ़ोतरी हुई है। सिर और गले में होने वाला कैंसर पांचवे नंबर का कैंसर है। यह उन्हें ज्यादा होता है, जो तम्बाकू और अल्कोहल का सेवन अधिक करते हैं।

सिर और गले का कैंसर

सिर और गर्दन पर होने वाला कैंसर ट्यूमर से फैलता है। ये कैंसर ओरल कैविटी, ग्रसनी, गला, नाक कैविटी, पैरानेजल साइनस, थाइरॉएड और सेलिवेरी ग्लैंड में होता है। भारत में मुंह और जीभ का कैंसर सिर और गर्दन के कैंसर से अधिक सामान्य है। यह भी देखा गया है कि गले और सिर के कैंसर से प्रभावित होने वालों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक होती है। भारत में हर वर्ष इस कैंसर के दो लाख से अधिक मामले सामने आते हैं। सिर और गले का कैंसर पुरुषों में होने वाले सभी प्रकार के कैंसर का 30 फीसदी होता है, जबकि महिलाओं में यह आंकड़ा 11 से 16 फीसदी के बीच होता है।

राजस्थान में कैंसर पर एक नजर

देश में हर तरक के कैंसर रोगियों के मामले में राजस्थान सातवें स्थान पर है। नेशनल कैंसर रजिस्ट्री प्रोग्राम के तहत 2022 के आंकड़ों के अनुसार देश में 14.61 लाख कैंसर रोगी हैं। इनमें सबसे ज्यादा 2.10 लाख मरीज उत्तरप्रदेश के हैं। राजस्थान 74 हजार 725 रोगियों के साथ देश में सातवें स्थान पर है। कैंसर से मौतों में राजस्थान 41167 मौतों के साथ आठवें स्थान पर है। राजस्थान में वर्ष 2020 से 2022 के बीच रोगियों की संख्या पांच प्रतिशत से ज्यादा बढ़ी है। वर्ष 2020 में 70 हजार 987 नए रोगी मिले जो 2022 में बढ़कर 74 हजार 725 हो गए हैं।

क्या हैं इसके लक्षण

सिर और गले के अधिकतर कैंसरों में प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते हैं। इसके लिए किसी को भी इसके संभवित कारणों की पहचान करनी आनी चाहिए, ताकि कैंसर कोशिकाओं का उपचार उनके फैलने से पहले किया जा सके। सिर और गले के कैंसर का कारगर उपचार उतना ही सफलतापूर्वक हो सकता है, जितनी शुरुआत में इसकी पहचान हो जाए। जितनी शुरुआत में इसकी पहचान हो जाए। यह छठा सबसे घातक कैंसर है और मृत्यु दर के मामले में आठवें स्थान पर है।

लक्षणों पर दें ध्यान

- मुंह में सूजन अथवा मुंह से खून आना
- गले में सूजन रहना
- आवाज कर्कश होना
- लम्बे समय से चली आ रही खांसी और खांसी के साथ खून आना
- कान में दर्द, सुनने में दिक्कत होना

कारण को जानें

तंबाकू (धूमपान और खाने में) सिर और गले के कैंसर के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से माना जाता है। तम्बाकू के साथ अगर एल्कोहल का सेवन किया जाए तो खतरा और बढ़ जाता है।

ह्यूमन पेपिलोमा वायरस (एचपीवी) को भी सिर और गले के कैंसर का एक कारक माना गया है। सिर और गले का कैंसर मुख्य रूप से एचपीवी के टॉन्सिल और तालू पर हमले से होता है। इसके साथ ही रेडिएशन, सुपारी चूसने या चबाने, कुछ खास विटामिनों की कमी, मसूड़ों की बीमारी भी इसके लिए उत्तरदायी होते हैं।

डॉ. डी.के. चौहान, फिजिशियन

100 रुपए की गोली से उपचार का दावा

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) मुम्बई के वैज्ञानिकों ने 10 साल के शोध व प्रयोग के बाद एक टैबलेट विकसित की है, जो कैंसर के उपचार में कारगर होगी। इसकी कीमत मात्र 100 रुपए होगी। टाटा मेमोरियल अस्पताल के वरिष्ठ कैंसर सर्जन और पूर्व निदेशक डॉ. राजेन्द्र बड़वे ने बताया कि यह टैबलेट कैंसर के इलाज के दौरान की जाने वाली कीमोथैरेपी के दुष्प्रभावों को 50 फीसदी तक कम करेगी और दूसरी बार कैंसर होने से रोकेगी। टीआईएफआर ने फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी से टेबलेट को बेचने की अनुमति मांगी है। इसके मई-जून में बाजार में उपलब्ध होने की उम्मीद है। हालांकि भगवान महावीर हॉस्पिटल के डॉ. ताराचंद गुप्ता व नारायणा हॉस्पिटल जयपुर के डॉ. रोहित स्वामी (दोनों कैंसर एक्सपर्ट्स) का मानना है कि दवा के ट्रायल चूहों पर ही सफल हुए हैं और मानव ट्रायल के बाद ही तस्वीर पूरी तरह साफ हो सकेगी। हम भी आशा करते हैं कि परिणाम सकारात्मक आए जिससे मरीजों को राहत मिले।

एक वेक्सिनः सात तरह के कैंसर से बचाव

उदयपुर। विश्व प्रसिद्ध कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. कीर्ति कुमार जैन ने कहा कि लाखों महिलाओं को एक वेक्सिन से सर्विक्स कैंसर सहित सात तरह के कैंसर से बचाना संभव है। सबसे बड़ी बात यह है कि वेक्सिन भारत निर्मित है। वे गत दिनों रोटरी क्लब मीरा की ओर से कैंसर से जंग जीत चुके रोगियों के सम्मान समारोह में (शक्ति अवार्ड) में बोल रहे थे। बतौर मुख्य अतिथि जीबीएच ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स, उदयपुर के चेयरमैन और अमेरिका में चिकित्सारत विश्व प्रसिद्ध कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. जैन ने कहा कि एनवायरमेंटल टॉक्सिन के कारण बच्चों से लेकर उम्रदराज कैंसर की चपेट में हैं। अव्यवस्थित दिनचर्या, मोटापा, खान-पान इसके प्रमुख कारण हैं। डॉ. जैन ने कहा कि हर साल डेढ़ लाख से अधिक महिलाएं सर्विक्स कैंसर, स्तन कैंसर की शिकार हो रही हैं। समय पर इलाज नहीं मिलने या रोग का पता नहीं लगने के कारण करीब 75 हजार महिलाएं बच नहीं पाती। इसमें 30 से 50 उम्र की महिलाओं की अधिकता है। डॉ. जैन ने बताया कि वर्ष 2005 से इससे बचाव के वेक्सिन मौजूद हैं, लेकिन जागरूकता का अभाव है। अब यह वेक्सिन भारत में भी निर्मित होने लगी है और कम दर पर उपलब्ध है। इस एक वेक्सिन से एचपीवी वायरस से होने वाले छह तरह के कैंसर से बचाव संभव है। रोटरी मीरा की अध्यक्ष संगीता मूंदड़ा ने कहा कि रोटरी मीरा की सदस्याएं कैंसर से बचाव के लिए जागरूकता अभियान चला रही हैं। कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. ममता लोढ़ा, डॉ. मेनन सरूपरिया, डॉ. मानसी शाह का भी अभिनंदन किया गया। संचालन ग्रुप सीईओ प्रीतम तंबोली ने किया। इस दौरान यूनिट हैड दुष्यंत शुक्ला, डायरेक्टर डॉ. सुरभि पोरवाल भी मौजूद रहे।

डॉ. कीर्ति जैन

कैंसर से जंग जीतने वाली श्रीमती विमला देवी जाट को सम्मानित करती रोटरी मीरा की पदाधिकारी।

मातृशक्ति अनुष्ठान के नौ दिन

देवी भागवत पुराण के अनुसार पूरे वर्ष में चार नवरात्र माने जाते हैं। जिनमें दो गुप्त नवरात्र सहित बासंती नवरात्र और शारदीय नवरात्र हैं। बासंती नवरात्र की घट स्थापना चैत्र प्रतिपदा 9 अप्रेल को होगी। चारों नवरात्र ऋतुचक्र पर आधारित हैं और सभी ऋतुओं के संधिकाल में अनुष्ठान पूर्वक मनाए जाते हैं।

डॉ. सीतेश द्विवेदी

वैसे सभी नवरात्र का आध्यात्मिक दृष्टि से अपना महत्व है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो यह प्रकृति और पुरुष के संयोग का भी अवसर है। प्रकृति मातृशक्ति है इसलिए इस दौरान देवी की पूजा होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि संपूर्ण सृष्टि प्रकृतिमय है और वह सिर्फ पुरुष है यानी हम जिसे पुरुष रूप में देखते हैं, वह भी आध्यात्मिक दृष्टि से प्रकृति यानी स्त्री रूप है। स्त्री से यहां तात्पर्य यह है कि जो पाने की इच्छा रखने वाला है वह स्त्री है और जो इच्छा की पूर्ति करता है वह पुरुष है।

ज्योतिष की दृष्टि से चैत्र नवरात्र का विशेष महत्व है, क्योंकि इस नवरात्र की अवधि में सूर्य का राशि परिवर्तन होता है। सूर्य 12 राशियों में भ्रमण पूरा करते हैं और फिर से अगला चक्र पूरा करने के लिए पहली राशि मेष में प्रवेश करते हैं। सूर्य और मंगल की राशि मेष दोनो ही अग्नि तत्व वाले हैं इसलिए इनके संयोग से गर्मी की शुरुआत होती है।

चैत्र नवरात्र से नववर्ष के पंचांग की गणना शुरू होती है। इसी दिन से वर्ष के राजा, मंत्री, सेनापति, वर्षा, कृषि के स्वामी ग्रह का निर्धारण होता है और वर्ष में अन्न, धन, व्यापार और सुख शांति का आंकलन किया जाता है। नवरात्र में देवी और नवग्रह की पूजा का कारण यह भी है कि ग्रहों की स्थिति पूरे वर्ष अनुकूल रहे और जीवन में खुशहाली बनी रहे।

जहां तक बात है चैत्र नवरात्र की तो धार्मिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है, क्योंकि चैत्र नवरात्र के पहले दिन आदिशक्ति प्रकट हुई थी और देवी के कहने पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण का काम शुरू किया था। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हिन्दू नववर्ष शुरु होता है। चैत्र नवरात्र के तीसरे दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में पहला अवतार लेकर पृथ्वी की स्थापना की थी। इसके बाद भगवान विष्णु का सातवां अवतार जो भगवान राम का है, वह भी चैत्र नवरात्र में हुआ था। इसलिए धार्मिक दृष्टि से चैत्र नवरात्र का बहुत महत्व है।

नवरात्र का महत्व सिर्फ धर्म, अध्यात्म और ज्योतिष की दृष्टि से ही नहीं है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी बड़ा महत्व है। ऋतु बदलने के लिए समय रोग जिन्हें आसुरी शक्ति कहते हैं, उनका अंत करने के लिए हवन, पूजन किया जाता है जिसमें कई तरह की जड़ी, बूटियों और वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है। हमारे ऋषि मुनियों ने न सिर्फ धार्मिक दृष्टि को ध्यान में रखकर नवरात्र में व्रत और हवन पूजन करने के लिए कहा है बल्कि इसका वैज्ञानिक आधार भी है। नवरात्र के दौरान व्रत और हवन-पूजन स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक हैं। इसका कारण यह है कि चारों नवरात्र ऋतुओं के संधिकाल में होते हैं यानी इस समय मौसम में बदलाव होता है जिससे शारीरिक और मानसिक बल की कमी आती है। शरीर और मन को पुष्ट और स्वस्थ बनाकर नए मौसम के लिए तैयार करने के लिए व्रत किया जाता है। ऋतु संधि बेला में व्रत-उपवास करने वाले को अपनी सेहत एवं स्थिति के अनुसार व्रत-उपवास रखना चाहिए। रोगी को डाक्टर से सलाह लेकर उपवास रखना चाहिए।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवसंवत्सर का आरंभ होता है, यह अत्यंत पवित्र तिथि है। इसी तिथि से पितामह ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण प्रारंभ किया था। वस्तुत: नवसंवत्सर भारतीय काल गणना का आधार पर्व है जिससे पता चलता है कि भारत का गणित एवं नक्षत्र विज्ञान कितना समृद्ध है।

चैत्रे मासि जगद् बह मा
ससर्ज प्रथमे ऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति।

इस तिथि के रेवती नक्षत्र में, विष्कुंभ योग में दिन के समय भगवान के आदि अवतार मत्स्यरूप का प्रादुर्भाव भी माना जाता है-

कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा,
रेवत्यां योगविष्कुम्भे दिवा द्वादशनाडिका :।
मत्स्यरूपकुमार्य च अवतीर्णों हरि:
स्वयम ?।

युगों में प्रथम सत् युग का प्रारंभ भी इस तिथि को हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्व की भी है, इसी दिन सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनाने के लिए विक्रम संवत् का प्रारंभ किया था।

Vikram Arora
Managing Director

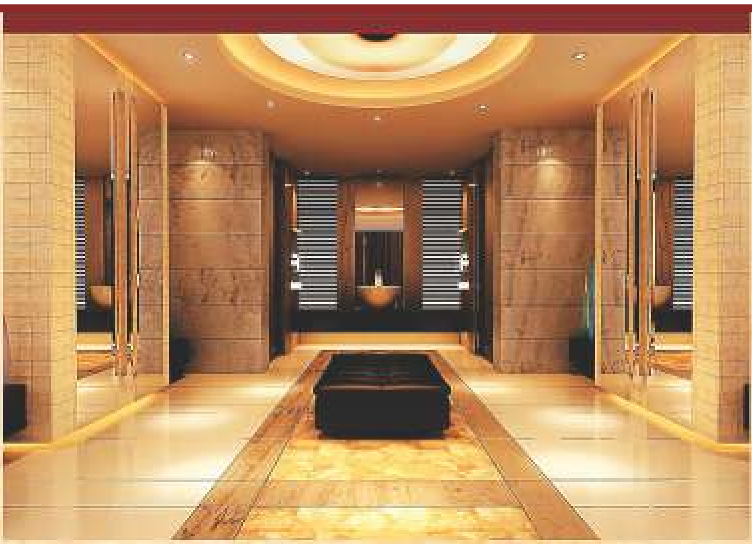

ARORA'S

JK NATURAL MARBLES LIMITED

ARORA GROUP

- ▲ Dairy
- ▲ Realty
- ▲ Mining
- ▲ Hospitality
- ▲ Distillery
- ▲ Trading

G-1, The IDEA Apartment, 14-A-1, New Fatehpura, Opp. Allahabad Bank
Udaipur - 313 004 (Raj.) India, Tel : +91 294-2414684 / 2810352

Corporate Office :
237, Ekta Co-operative Housing Society Ltd., Unit No. 1896
Motilal Nagar No. 1, Road No. 4, Opp. Ganesh Mandir Ground, Goregaon, West Mumbai - 400104

www.jkmarble.com | vikramarora@jkmarble.com

प्रत्यूष

युग महावीर का फिर से लाएं

भगवान महावीर ने जीवनभर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्ट सहे, दुख में से सुख की खोज की और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे, यही वजह है कि वे आदर्शों की एक ऊंची मीनार बन गए। उन्ही आदर्शो पर चलते हुए हमें भी महावीर बनने का संकल्प लेना होगा।

आचार्य डॉ. लोकेश मुनि

21 अप्रेल : महावीर जयंती विशेष

महावीर ने अनेकांत का चिन्तन दिया, हम अपने वैयक्तिक विचारों के आग्रह में बंधकर रह गए। महावीर ने अपरिग्रह का जीवन सूत्र दिया, हमने वैभव विलासिता की दीवारों को ऊंची करने में जीवन खपा दिया। महावीर ने समता से जीने की सीख दी पर हम अनुकूलता के बीच संतुलन धैर्य रखना भूल गए। महावीर ने असाम्प्रदायिक अखण्ड धर्म की व्याख्या की, हमने उसे जाति, सम्प्रदाय और पंथों में विभक्त कर दिया। महावीर ने अभय एवं मैत्री का सुरक्षा कवच पहनाया, हम प्रतिशोध और प्रतिस्पर्धा को ही राजमार्ग समझ बैठे। अगर हम जीवन को सफल एवं सार्थक करना चाहते हैं तो हमें महावीर को केवल पूजना ही नहीं है, बल्कि जीना होगा। महावीर को जीने का तात्पर्य होगा- एक आदर्श जीवनशैली को जीना ।

महावीर जयन्ती सत्संकल्पों को जागृत करने का पर्व है और सबसे बड़ा संकल्प है मनुष्य स्वंय को बदलने के लिए तत्पर हो। सरल नहीं है मनुष्य का बदलना। बहुत कठिन है नैतिक मूल्यों का विकास । बहुत-बहुत कठिन है आध्यात्मिक चेतना का रूपांतरण। और भी कठिन है अहिंसा की स्थापना। एक संकल्प हो कि हमारी अज्ञानता मिटे। हिंसा, युद्ध एवं भौतिकवादी युग में महावीर के प्रकाश की आवश्यकता केवल भीतर के अंधकार मोह-मूर्च्छा को मिटाने के लिए ही नहीं, अपितु लोभ और आसक्ति के परिणामस्वरूप खड़ी हुई पर्यावरण प्रदूषण और अनैतिकता, हिंसा और युद्ध जैसी बाहरी समस्याओं को सुलझाने के लिए भी जरूरी है।

भगवान महावीर की जयन्ती मनाते हुए हमें महावीर बनने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्टों को सहा, दुख में से सुख खोजा और गहन तप एवं साधना को बल पर सत्य तक पहुंचे इसलिए वे हमारे लिए आदर्शों की ऊंची मीनार बन गए। उन्होंने समझ दी कि महानता कभी भौतिक पदार्थों, सुख-सुविधाओं, संकीर्ण सोच एवं स्वार्थी मनोवृति से प्राप्त नहीं की जा सकती उसके लिए सच्चाई को बटोरना होता है, नैतिकता के पथ पर चलना होता है और अहिंसा की जीवन शैली अपनानी होती है। भगवान महावीर की मूल शिक्षा है- 'अहिंसा' । सबसे पहले 'अहिंसा परमो धर्म' का प्रयोग हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के पावन ग्रंथ 'महाभारत' के अनुशासन पर्व में किया गया था। लेकिन इसको अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलवाई भगवान महावीर ने। भगवान महावीर ने अपनी वाणी और स्वयं के जीवन से इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान महावीर का नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा-सीधा अर्थ है, व्यावहारिक जीवन में किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुख न दें। 'आत्मान: प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्' इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी को अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपयोग नहीं करें। महावीर की आज ज्यादा जरूरत एवं प्रासंगिकता है। उनका अहिंसा दर्शन आज की जरूरत है। क्योंकि हमने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति, पदार्थ, प्राणी और पर्यावरण के सहअस्तित्व को नकार दिया है।

आज मनुष्य जिन समस्याओं से और जिन जटिल परिस्थितियों से घिरा हुआ है उन सबका समाधान महावीर के दर्शन और सिद्धांतों में समाहित है। जरूरी है कि हम महावीर ने जो उपदेश दिए उन्हें जीवन और आचरण में उतारें। हर व्यक्ति महावीर बनने की तैयारी करे, तभी समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है। महावीर वही व्यक्ति बन सकता है जो लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो, जिसमें कष्ट सहने की क्षमता हो। जो प्रति कूल परिस्थितियों में भी समता एवं

संतुलन स्थापित रख सके, जा मौन की साधना और शरीर को तपाने के लिए तत्पर हो। जो पुरुषार्थ द्वारा न केवल अपना भाग्य बदलना जानता हो, बल्कि संपूर्ण मानवता के उज्ज्वल भविष्य की मनोकामना रखता हो।

महावीर के जीए गए वे सारे सत्य धर्म के व्याख्या सूत्र बने हैं जिन्हें उन्होंने ओढ़ा नहीं था, बल्कि साधना की गहराइयों में उतरकर आत्मचेतना के तल पर पाया था। उन्होंने जो पाया उसी से योग का सूत्र दिया है, ध्यान का सूत्र दिया है। ध्यान करने का मतलब है अपनी शक्ति से परिचित होना अपनी क्षमता से परिचित होना, अपना सृजनात्मक निर्माण करना, अहिंसा की शक्ति को प्रतिष्ठापित करना। जो आदमी अपने भीतर गहराई से नहीं देखता, वह अपनी शक्ति से परिचित नहीं होता। जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं होता, अपनी शक्ति को नहीं जानता उसकी सहायता भगवान भी नहीं कर सकता। अगर काम करने की उपयोगिता है और क्षमता भी है तो वह शक्ति सृजनात्मक हो जाती है और किसी को सताने मारने की उपयोगिता है तो वह शक्ति ध्वंसात्मक हो जाती है। इसलिए महावीर का संपूर्ण जीवन स्व और पर के अभ्युदय की जीवंत प्रेरणा है। लाखों-लाखों लोगों को उन्होंने अपने आलोक से आलोकित किया है। उनके मन में प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व की भावना थी। भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन तप और ध्यान की पराकाष्ठा है इसलिए वह स्वत: प्रेरणादायी है। महावीर के उपदेश जीवनस्पर्शी हैं जिनमें जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। वे चिन्मय दीपक हैं, जो अज्ञान रूपी अंधकार को हरता है। वे सचमुच प्रकाश के तेजस्वी पुंज और सार्वभौम धर्म के प्रणेता - हैं। वे इस सृष्टि के मानव मन के दु:ख-विमोचक हैं। पदार्थ के अभाव में उत्पन्न दु:ख को सद्भाव से मिटाया जा सकता है, श्रम से मिटाया जा सकता है किंतु पदार्थ की आसक्ति से उत्पन्न दुख को कैसे मिटाया जाए ? इसके लिए महावीर के दर्शन की अत्यंत उपादेयता है।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण
घोषणा पत्र फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	आशीष बापना
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. पावर हाउस के पास एमआईए एक्सटेंशन, रिको, उदयपुर
4. प्रकाशक का नाम	पंकज शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर
5. सम्पादक का नाम	विष्णु शर्मा हितैषी
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	हितैषी भवन, सूरजपोल अन्दर, उदयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	पंकज शर्मा रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर

मैं पंकज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 25 मार्च, 2024 — **पंकज शर्मा**

स्थान : उदयपुर — **प्रकाशक**

वाहनों के शोर में कम हो रही इंसानों की उम्र

जैसे-जैसे हम अपनी सुविधाओं में बढ़ोतरी करते जा रहे हैं, वैसे-वैसे हम इनका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि वाहनों, ट्रेनों और हवाई जहाजों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य की आयु घट रही है। इस संबंध में वैज्ञानिक पूर्व में भी चेतावनी दे चुके हैं।

140 डेसीबल का शोर उत्पन्न करता है एक हवाई जहाज

90 डेसीबल का शोर उत्पन्न होता है एक बस के हॉर्न से

110 डेसीबल का शोर होता है निर्माण कार्यों में ड्रिल से

डब्ल्यूएचओ ने भी तय किया है मानक

65 डेसीबल से अधिक के शोर को ूएचओ ने ▪ ूषण माना है

75 डेसीबल का शोर नुकसानदायकऔर 120 डेसीबल का शोर पीड़ादायक

30 डेसीबल रात में और 65 डेसीबल तक की आवाज दिन के लिए मान्य

53 डेसीबल तक यातायात से होने वाले ध्वनि ▪ ूषण का सेहत पर नहीं पड़ता है कोई नकारात्मक प्रभाव

ब्रिटेन की स्वास्थ्य सुरक्षा एजेंसी में किए गए शोध में पता चला कि जो लोग लगातार ट्रेन, कार और हवाई जहाजों के शोर का सामना करते है, उनके अंदर नींद की कमी, तनाव, अवसाद आदि परेशानियां बढ़ने लगती हैं। इतना ही नहीं, इन लोगों में मधुमेह और दिल की बीमारियों का जोखिम भी बढ़ता जाता है।

अध्ययन के दौरान इंग्लैंड के एक इलाके में परिवहन के साधनों से होने वाले शोर का लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव देखा गया। अध्ययनकर्ताओं ने शोर के प्रभाव को मापने के लिए दिव्यांगता समायोजन जीवन वर्ष डीएएलवाई का उपयोग किया। इसमें पाया गया कि साल 2018 में सड़क यातायात से होने वाले ध्वनि प्रदूषण की वजह से अच्छे स्वास्थ्य के एक लाख साल, ट्रेनों की आवाज की वजह से 13000 साल और हवाई जहाज के शोर से 17000 साल कम हो गए। इतना ही नहीं शोधकर्ताओं ने कहा कि ध्वनि प्रदूषण वाले इलाकों में रहने से लोगों का स्ट्रोक, मधुमेह, अवसाद और तनाव जैसी बीमारियों का शिकार होने का जोखिम भी बढ़ जाता है।

24 घंटे में ज्यादा शोर सुनने वाले जल्दी बीमार: अध्ययन में यह भी कहा गया कि लंदन में देश के दूसरे इलाकों के मुकाबले सड़क यातायात से होने वाले ध्वनि प्रदूषण की वजह से अच्छे स्वास्थ्य पर खतरा तीन गुना बढ़ गया। शोधकर्ताओं ने कहा कि जो लोग 24 घंटे में 50 डेसीबल से ज्यादा शोर सुनते हैं, उनका स्वास्थ्य जल्दी खराब होने की आशंका रहती है। रिपोर्ट में कहा गया कि खासकर परिवहन के साधनों से होने वाला शोर हमारे स्वास्थ्य पर ज्यादा प्रभाव डालता है। *(एजेंसी)*

भारत में भी ध्वनि प्रदूषण से स्वास्थ्य पर प्रभाव

हाल ही में अर्थ फाइव आर संस्था द्वारा भारत के 15 शहरों में किए गए अध्ययन में पता चला है कि यहां शांत और रिहायशी इलाकों में शोर का स्तर स्वीकृत 50 डेसीबल से पचास फीसदी अधिक है। यहां सड़क यातायात के अलावा शोर के अन्य कारकों से ध्वनि प्रदूषण पाया गया। अध्ययन में ध्वनि प्रदूषण का स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव बताया गया है।

With Best Compliments

Mahesh Chandra Sharma
Director

Lakecity Buildtech Pvt. Ltd.

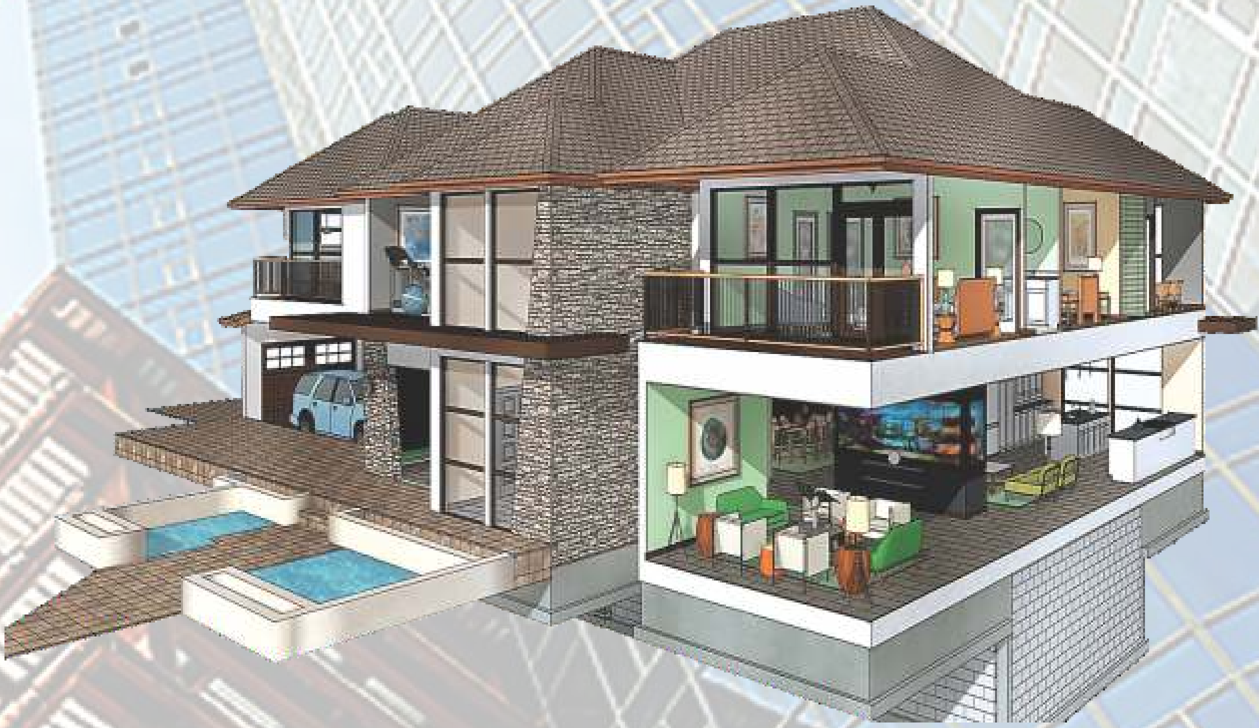

Office : 3rd Floor, 2-B, Hazareshwar Colony, Court Road, Udaipur-313 001
Residence : "Kaustubh", 1A, Navratna-Modern Link Road, Udaipur-313 001
(M) +91 9829040569 (O) +91 294- 2413003 (R) +91 294 2980030
E-mail : mcsharma.lakecitybuildtech@gmail.com

अश्लील बाल फिल्में देखना 'निजता' के दायरे में नहीं

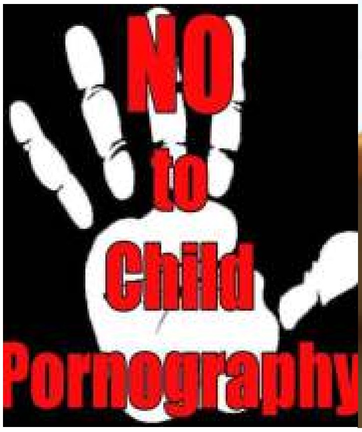

घर के एकांत में भी अश्लील बाल फिल्में डाउनलोड करने और देखने को आप निजता का मामला बता कर इस अपराध से बच नहीं सकते, क्योंकि जिला पुलिस और विभिन्न केंद्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां आप पर निगरानी रख रही हैं। बच्चों की अश्लील फिल्में देखने और अश्लील सामग्रियां डाउनलोड करने को अपराध नहीं ठहराने के मद्रास हाई कोर्ट के फैसले की समीक्षा के सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से यह सख्त संदेश गया है कि बाल पोर्न देखने पर आप निजता का हवाला देकर नहीं बच सकते। शीर्ष अदालत का यह फैसला उन सभी लोगों के लिए चेतावनी है जो सोचते हैं कि अकेले में बच्चों से जुड़ी अश्लील सामग्रियां देखना अपराध नहीं है। बाल पोर्नोग्राफी पर मद्रास हाई कोर्ट के फैसले को 'भद्दा और बेतुका' बताते हुए तमिलनाडु सरकार को नोटिस जारी किया है। शीर्ष अदालत ने यह आदेश गैरसरकारी संगठनों के समूह जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस की याचिका पर दिया जिसने, मद्रास हाई कोर्ट के हालिया फैसले को चुनौती दी थी। यह स्पष्ट करता है कि कोई व्यक्ति अकेले में भी बाल पोर्न देख रहा है तो वह जिला, राज्य और केंद्र सहित दुनिया की तमाम एजेंसियों की नजर और निगरानी में है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में जो तात्कालिकता और गंभीरता दिखाई है, वह बच्चों के ऑनलाइन यौन शोषण के खिलाफ लड़ाई में एक अहम कदम है। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों मद्रास हाई कोर्ट ने एक चर्चित आदेश में चेन्नई के 28 वर्षीय एक व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर और आपराधिक कार्रवाई को खारिज करते हुए कहा था कि बाल पोर्नोग्राफी देखना पॉक्सो अधिनियम, 2012 के प्रावधानों के दायरे में नहीं आता। आरोपी ने अपने

डॉ. शैलेन्द्र पंड्या

मोबाइल में बच्चों की अश्लील फिल्में और वीडियो डाउनलोड कर रखे थे। खास बात यह है कि इस बाबत पुलिस ने बगैर किसी शिकायत के सूत्रों से मिली जानकारी के आधार पर खुद ही मामला दर्ज किया था। छानबीन के दौरान पुलिस ने आरोपी के मोबाइल से बच्चों से जुड़ी सामग्रियों की दो फाइलें बरामद की। हाई कोर्ट ने यह कहते हुए मामले को खारिज कर दिया कि आरोपी ने महज बाल पोर्नोग्राफी से जुड़ी सामग्रियां डाउनलोड कर इसे अकेले में देखा, उसने इसे कहीं भी प्रसारित या वितरित नहीं किया। लेकिन गैरसरकारी संगठनों के गठबंधन जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस, जिसके 120 से ज्यादा सहयोगी हैं और 'बचपन बचाओ आंदोलन' ने हाईकोर्ट के इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। यह गठबंधन देश में बच्चों के यौन उत्पीड़न, चाइल्ड ट्रैफिकिंग यानी बाल शोषण और बाल विवाह के खिलाफ काम कर रहा है। हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती देते हुए एलायंस ने याचिका में कहा कि इस फैसले से आम जनता में यह संदेश गया है कि बाल पोर्नोग्राफी देखना और इसके वीडियो अपने पास रखना कोई अपराध नही है। इससे बाल पोर्नोग्राफी से जुड़े वीडियो की मांग और बढ़ेगी और लोगों का इसमें मासूम बच्चों को शामिल करने के लिए हौसला बढ़ेगा। सुप्रीम कोर्ट ने मद्रास हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देने वाली जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन एलायंस की याचिका को सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया था। सुप्रीम कोर्ट के नोटिस पर खुशी जाहिर करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता एच. एस. फूलका ने कहा, यह न्याय का अधिकार सुनिश्चित करने की दिशा में ऐतिहासिक पल है जहां सुप्रीम कोर्ट ने यह माना है कि एक आपराधिक मामले में भी कोई तीसरा पक्ष जो कि सीधे इस अपराध से प्रभावित नहीं है, ऊपरी अदालतों का रुख कर सकता है अगर उसे लगता है कि न्याय नहीं हुआ है। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि यह मामला पॉक्सो के दायरे में नहीं आता क्योंकि आरोपी ने बाल पोर्नोग्राफी के लिए किसी बच्चे या बच्चों का इस्तेमाल नहीं किया। लिहाजा इसे ज्यादा से ज्यादा आरोपी का नैतिक पतन कहा जा सकता है। अदालत ने आरोपी को बरी करने के लिए आईटी और पॉक्सो एक्ट के तहत दिए गए केरल हाई कोर्ट के एक फैसले का सहारा लिया। जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस ने अपनी याचिका में कहा कि इस मामले में केरल हाई कोर्ट के फैसले पर भरोसा करना एक चूक थी। एलायंस ने कहा, 'सामग्रियों की विषयवस्तु एवं प्रकृति से स्पष्ट है कि यह पॉक्सो के प्रावधानों के तहत आता है और यह इसे उस मामले से अलग करती है जिस पर केरल हाई कोर्ट ने फैसला दिया था।' राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार देश में बाल पोर्नोग्राफी के मामले में तेजी से इजाफा हुआ है। देश में 2018 में जहां 44 मामले दर्ज हुए थे वहीं 2022 में यह बढ़कर 1171 हो गए।

(लेखक बाल अधिकार विशेषज्ञ एवं जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन एलायंस के सदस्य हैं।)

Hotel Yois
A unit of bhmpl

Elegant
Multi-Functional Hall

The Occasion
Wedding & Special Events

Silver Spoon
Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Regal
Multi-Functional Garden

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact : 8239366888, 8239466888, 9828596555
email: gm@hotelyois.com reservations@hotelyois.com

अखंड सुहाग की कामना का पर्व: गणगौर

रमेश सर्राफ धमोरा

गणगौर का पर्व राजस्थान में अनादिकाल से ही प्रमुख लोकोत्सव के रूप में मनाया जाता रहा है। विवाहिता एवं कुंवारी महिलाएं गणगौर की पूजा करती हैं। होली के दूसरे दिन से सोलह दिनों तक लड़कियां प्रतिदिन प्रात: काल ईसर-गणगौर को पूजती हैं। जिस लड़की की शादी हो जाती है वो शादी के प्रथम वर्ष अपने पीहर जाकर गणगौर की पूजा करती है। इसी कारण इसे 'सुहागपर्व' भी कहा जाता है। कहा जाता है कि चैत्र शुक्ल तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह भगवान शंकर के साथ हुआ। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भस्म हुए अपने पति को पुन: जीवन दान की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुन: जीवित किया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रति वर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है एवं विवाह के समस्त नेगचार होते हैं। होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली बालाएं होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ ही पिण्ड गोबर के बनाती हैं तथा उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है, फिर मिट्टी से ईसर-गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में गणगौर पूजते हुए गाती हैं- 'गौर ये गणगौर माता खोल किंवाड़ी, छोरी खड़ी है तन पूजण वाली।' गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती हैं। दोपहर को गणगौर के भोग लगाया जाता है तथा कुए से लाकर उसे पानी पिलाया जाता है। लड़कियां कुए से ताजा पानी लेकर गीत गाती हुई आती हैं-

'ईसरदास बीरा को कांगसियो म्हे मोल लेस्यां राज,
रोंवा बाई का लाम्बा-लाम्बा केश,
कांगसियों बाईक सिर चढ़योजी राज।' 'म्हारी गौर तिसाई ओ राज घाट्यारी मुकुट करो, बीरमदासजी रो ईसर ओ राज, घाटी री मुकुट करो, म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटी री मुकुट करो।

लड़कियां गीतों में गणगौर के प्यासी होने पर काफी चिन्तित लगती हैं एवं वे गणगौर को शीघ्रातिशीघ्र पानी पिलाना चाहती हैं। पानी पिलाने के बाद गणगौर को गेहूं चने से बनी 'घुघरी' का प्रसाद लगाकर सबको बांटा जाता है और लड़कियां गाती हैं-

'म्हारा बाबाजी के माण्डी गणगौर,
दादसरा जी के माण्ड्यो रंगरो झूमकड़ो,
ल्यायोजी-ल्यायो ननद बाई का बीर,
ल्यायो हजारी ढोला झूमकड़ो।
रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं-
'म्हारा माथान मैमद ल्यावो म्हारा हंसा मारू यहीं रहवो जी' म्हारा काना में कुण्डल ल्यावो म्हारा हंसा मारू यहीं रह वोजी।

गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लड़की के घर गणगौर ले जाई जाती है, जहां गणगौर का बिन्दौरा निकाला जाता है तथा घर के पुरुष लड़कियों को भेट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैं- ईसरजी तो पेंचो बांध गोराबाई पेच संवार ओ राज म्हे ईसर थारी सालीछां। गणगौर विसर्जन के पहले दिन गणगौर का सिंगारा किया जाता है, लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं, नये कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाए जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब कुए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दु:खी हो जाती हैं- गोरल ये तू आवड़ देख बावड़ देख तन बाई रोवा याद कर। गणगौर की विदाई के बाद त्यौहार काफी समय तक नहीं आते इसलिए, कहा गया है- 'तीज त्यौहारा बावड़ी ले डूबी गणगौर' अर्थात जो त्यौहार तीज, श्रवण मास से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाएं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत होती है। दूर प्रान्तों में रहने वाले युवक गणगौर के पर्व पर अपनी नव विवाहित प्रियतमा से मिलने अवश्य आते हैं। जिस गोरी का साजन इस त्यौहार पर भी घर नहीं आता वो सजनी नाराजगी से अपनी सास को उलाहना देती है- 'सास भलरक जायो ये निकल गई गणगौरण मोल्यो मोड़ो आयो रे' राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहलों से निकलती है इनके दर्शन करने देशी-विदेशी सैलानी उमड़ते हैं। सभी उत्साह से भाग लेते हैं। इस उत्सव पर एकत्रित भीड़ जिस श्रद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर की जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है जिसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी इस संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। ढूंढाड़ की भांति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरुधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

बार-बार लौट के आने वाली खुशी है ईद

सिवइयों की मिठास, सर्वधर्म सद्भाव, रिश्तों की मनुहार और प्रेम की मीठी फुहार है ईद। पवित्र रमजान माह के रोजे और इबादतों के बाद आने वाला ईद-उल-फितर का त्योहार खुदा का इनाम है। खुशियों का गुलदस्ता है, मुस्कुराहटों का मौसम और जश्न की रौनक है। इसलिए ईद का चांद नज़र आते ही माहौल में गजब का उल्लास छा जाता है। ईदगाह में नमाज के बाद अल्लाह से दुआ मांगते व रमजान के रोजे और इबादत की हिम्मत के लिए खुदा का शुक्र अदा करते अनगिनत हाथ हर तरफ दिखाई पड़ते हैं। यह उत्साह बयान करता है कि लो ईद आ गई। सिवइयों या शीर-खुरमे से मुंह मीठा करने के बाद छोटे-बड़े, अपने-पराए, दोस्त-दुश्मन गले मिलते हैं तो चारों तरफ मोहब्बत ही मोहब्बत नज़र आती है। खुशी से दमकते चेहरे इन्सानियत का पैगाम देते दिखाई पड़ते हैं।

एम.ए. कुरैशी

माहे रमजान इबादत और गुनाहों की माफी का है। इस महिने में लोग पाबंदी के साथ रोजा, नमाज, तरावीह और तिलावत में लीन रहते हैं जिसकी वजह से तमाम मस्जिदें नमाजियों से लबालब रहती हैं। घरों में भी रोजा, नमाज, तरावीह और तिलावत का नूर बरसता रहता है। तीस रोज तक अपनी नफ्स पर काबू रखते हुए गर्मी, प्यास, भूख की परवाह किए बिना लोग पूरी शिद्दत से अल्लाह की राह में रोजे रखते हैं। अल्लाह की राह में तीस रोजों के पूरे होने की खुशी को ईद के रूप में मनाया जाता है। ईद का शाब्दिक अर्थ बार-बार लौट कर आने वाली खुशी। रमजानुल मुबारक के एक माह में जो मेहनत और मश्क्कत की उसका तोहफा अल्लाह ने मुसलमानों का ईद के रूप में दिया है।

मकसद खुद में अनुशासन लाना

लैयलतुल जाएजा यानि इनाम की रात। माहे रमजान की पांच मुबारक रातों में यह एक अहम रात है। घर से लेकर ईदगाह तक फरिश्ते उन मोमिनान के इस्तकबाल में खड़े रहते हैं जिन्होंने एक माह की मशक्कत और तकलीफ को बर्दाश्त करते हुए अपने अंदर वो अच्छाइयां पैदा की जो रमजान से चाही गई। रमजान का मकसद खुद में अनुशासन लाना और उसके मुताबिक जीने का जज्बा पैदा करना।

हर तरफ खुशी का मंजर

ईद के मौके पर लोग बड़ी तादाद में ईदगाह पहुंचते हैं और ईदुल फितर की नमाज अदा कर मुल्क की बेहबूदी, अमन-चैन और आपसी भाईचारे की दुआ मांगते हैं। ईद की नमाज के बाद हर शख्स गले मिलकर एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद पेश करता है। हर तरफ खुशी का मंजर नजर आता है।

दुआ, तोहफे व प्यार

ईदगाह और दिगर मस्जिदों से ईद की नमाज अदा करने के बाद घर पहुंच छोटे-बड़ों और महिलाओं को लोग ईद की मुबारकबाद पेश करते हैं। बच्चों को ईदी के रूप में तोहफे भेंट किए जाते हैं। उन्हें ढेर सारा प्यार दिया जाता है। इसके अलावा जो लोग दूर हैं उन्हें वीडियो कॉल के जरिए ईद की मुबारकबाद दी जाती है। इसी क्रम में जो शहर से दूर दूसरे शहर में या बाहरी मुल्क में होते हैं वे भी अपने अजीज रिश्तेदारों को वीडियो कॉल, मैसेज व्हाट्स एप, ट्वीटर, फेसबुक आदि के जरिए ईद की मुबारकबाद पेश करते हैं। बुजुर्गों को भी गले मिलकर ईद की मुबारकबाद पेश की जाती है। बुजुर्ग सिर पर हाथ रख बच्चों की अच्छी सेहत और जिंदगी की दुआ करते हैं। ईद की खुशी तब कई गुना बढ़ जाती है जब अन्य समाज के लोग घर आकर गले मिल ईद की मुबारकबाद देते हैं। घर में बनी सैंवई व शीर-खुरमा और अन्य व्यंजनों का लुत्फ उठाते हैं।

दुनिया से गए उनके लिए भी दुआ

ईद की खुशी में अपने प्यारे अजीज उन लोगों को भी शामिल किया जाता है जो दुनिया छोड़ कर चले गए। इसके लिए ईद की नमाज अदा करने के बाद लोग सबसे पहले कब्रिस्तान जाते हैं और उनकी कब्र पर फूल और अगरबत्ती पेश कर फातिहा पढ़ते हैं और परवरदिगार से उनकी मगफिरत और जन्नतुल फिरदोस में जगह देने की दुआ मांगते हैं। फिर अपने घर आकर घर के सदस्यों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों को गले मिलकर ईद की मुबारकबाद पेश करते हैं।

जार व सुधाकर पीयूष स्मृति मंच द्वारा पत्रकारों का सम्मान

पत्रकार कलम का सिपाही : सारंगदेवोत

उदयपुर। राजस्थान जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) एवं सुधाकर पीयूष स्मृति मंच के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 मार्च को उदयपुर के नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थल) में पत्रकारों का भव्य सम्मान समारोह आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ जे.आर. नागर विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि पत्रकार कलम का ऐसा सिपाही है जिसकी लेखनी व्यक्ति के जीवन और समाज की व्यवस्था में परिवर्तन लाती है। समारोह के विशिष्ठ अतिथि आईएमए के अध्यक्ष डॉ. आनंद गुप्ता ने कहा कि पत्रकार समाज का सजग प्रहरी है और उसका सम्मान प्रेरणादायी है। विशिष्ठ अतिथि इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, सुधाकर पीयूष की धर्म पत्नी रेखा पीयूष, सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य, प्रत्यूष के सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी, महापौर जीएस टांक, पूर्व सभापति युधिष्ठिर कुमावत, समाजसेवी मुकेश माधवानी, अल्का मून्दड़ा व शांतिलाल महता थे। समारोह में उत्कृष्ट पत्रकारिता का सम्मान वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी को प्रदान किया गया। पत्रकार प्रतिभा चयन समिति के समन्वयक योवन्तराज ने बताया कि विभिन्न श्रेणियों में 11 पत्रकारों को सम्मानित किया गया, जिनमें ग्रामीण क्षेत्र के पत्रकार भी शामिल हैं। नारायण वडेरा कोटड़ा, विवेक वैष्णव चित्तौड़गढ, ओमप्रकाश शर्मा कुम्भलगढ़, प्रमोद सोनी उदयपुर, शंकर चावड़ा फतहनगर, विप्लव जैन उदयपुर, मांगीलाल लोहार मेनार, नरेन्द्र कहार उदयपुर, किंजल तिवारी उदयपुर, ओमपाल सिलन उदयपुर, लीलेश खटीक पलाना, धीरेन्द्र जैन ऋषभदेव, चंद्रेश कलाल डूंगरपुर, संतोष व्यास डूंगरपुर व ताराचंद गवारिया उदयपुर को स्मृति चिह्न, शॉल, पगड़ी व उपरना प्रदान कर सम्मानित किया गया। पत्रकारिता पाठ्यक्रम के छात्र डिम्पल सुहालका व मानस जैन को गिर्राज प्रसाद हरदौनिया स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। जार के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष शर्मा ने पत्रकारों के हितों में संगठन की कार्यवाही की जानकारी दी। उदयपुर जिला अध्यक्ष राजदीप शर्मा 'राकेश' ने संगठन की भावी योजनाओं का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कौशल मूंदड़ा, नानालाल आचार्य, प्रदेश सचिव राजेश वर्मा, महिपाल सिंह का सुधाकर पीयूष के परिवार से पुत्री ऋचा व मेधा तथा उनके दामाद मनीष एवं सचिन ने अभिनंदन किया। संचालन प्रखरवक्ता डॉ. सीमा चम्पावत एवं ओमप्रकाश सिलन ने किया। कार्यक्रम में संगीत और पत्रकारिता के क्षेत्र में सुधाकर पीयूष के योगदान पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने कहा कि उनके पिता स्वतंत्रता सेनानी पंडित पन्नालाल पीयूष का भी संगीत में एक ऐसा मुकाम रहा जिसे भूलाया नहीं जा सकता।

डॉ. लुहाड़िया नए वीसी

उदयपुर। गीतांजलि यूनिवर्सिटी में डॉ. एस.के. लुहाड़िया ने वाइस चांसलर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, रजिस्ट्रार मयूर रावल, एफएस मेहता ने उन्हें बधाई दी।

डॉ. खण्डेलवाल बने अति. महाधिवक्ता

उदयपुर। उदयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. प्रवीण खण्डेलवाल को राज्य सरकार ने वरिष्ठ अतिरिक्त महाधिवक्ता (एएजी) नियुक्त किया है। उदयपुर सेशन कोर्ट से पहली बार किसी अधिवक्ता को यह जिम्मेदारी मिली है। खंडेलवाल ने कहा कि मेरे लिए यह जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है, जिसे पूरी निष्ठा एवं इमानदारी से पूरा करूंगा। अधिवक्ता के साथ ही पार्टी के विभिन्न पदों पर रहे खंडेलवाल उदयपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे भी हैं।

हिरेन जोशी व आनंद शर्मा ने संभाला पदभार

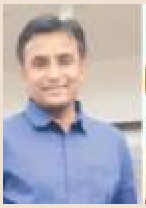

जयपुर। मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार हिरेन जोशी और मीडिया समन्वयक आनंद शर्मा ने शासन सचिवालय के मुख्य भवन में पदभार संभाला। शर्मा ने पूजा पाठ और मंत्रोच्चार के साथ पदभार ग्रहण किया। इस दौरान उनके परिजन और डीआईपीआर के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे। पदभार संभालने के बाद आनंद शर्मा ने कहा कि मुझे जो दायित्व मिला है, उसका मैं पूरी तरह निर्वहन करूंगा। हिरेन जोशी ने कहा कि मुझे मीडिया और सरकार के बीच सेतु का काम करना हैं। हम सभी मिलकर जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन तक कैसे मिले, इस दिशा में काम करना है।

सीडलिंग में अटल टिंकरिंग लैब का शुभारंभ

उदयपुर। सीडलिंग स्कूल सापेटिया में शिक्षा विभाग के प्रशासनिक अधिकारी अजय कोठारी ने अटल टिंकरिंग लैब का उद्घाटन किया। एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर मोनीटा बक्षी के जन्म दिवस पर लैब का शुभारंभ किया गया। चेयरमैन हरदीप बक्षी ने इस लैब का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान में सुधार और उन्हें सक्रिय बनाना बताया।

वृद्धाश्रम को दी वाशिंग मशीन

उदयपुर। बैंक ऑफ बड़ौदा ने तारा संस्थान के मां द्रोपदी देवी आनंद वृद्धाश्रम को दो वाशिंग मशीनें भेंट की। इस अवसर पर बैंक के रिजनल हेड उदेशकुमार, डिप्टी रिजनल मैनेजर प्रशांत कुमार जैन, रिजनल बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर अभिषेक गौड़, सीनियर मैनेजर (मार्केटिंग) अंकिता भटनागर तथा सीनियर मैनेजर अर्पणा जैन भी उपस्थित थे। संस्थान के निदेशक (जन सम्पर्क) विजय चौहान ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

Dharmesh Navlakha
Director
94141 66977

Sahil Navlakha
Director
96106 58614

Solitaire Garden & Banquets

A Perfect Wedding Venue

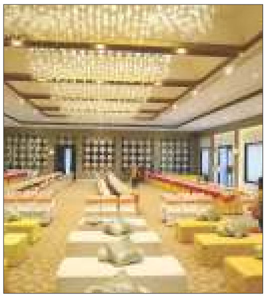

★ Marriage Garden ★ Banquet Hall ★ Decoration & Lighting
★ Catering Service ★ Rooms

Shobhagpura Bypass Road, Shyam Nagar, Pahada, Udaipur, Rajasthan 313001
Mob.: +91 96106 58614, 77427 41351, Email.: solitairegnb@gmail.com

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

Kailash Agarwal
Director
9414159130

Pankaj Agarwal
Director
9414621211

YUVRAJ PAPERS

Yuvraj Papers

Papers | Printing | Stationery

11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar,
Udaipur - 313001 Phone :- + 91-294-2418586

email : info@yuvrajpapers.com

सही दिशा में लगाएं बिजली के उपकरण

घरों में बिजली के उपकरणों को हम अपनी सुविधानुसार लगा लेते हैं। अगर इन्हें अनुकूल दिशा में रखा जाए तो जीवन में सहूलियत रहती है और स्वास्थ्य भी प्रभावित नहीं होता।

नरेश सिंघल

चाहे बिजली का मीटर हो या फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कंप्यूटर, टीवी या फिर बिजली के अन्य उपकरण, अमूमन लोग इन्हें अपनी सहूलियत के अनुसार घर में स्थान देते हैं। लेकिन वास्तु कहता है कि इन्हें अगर अनुकूल दिशा में स्थान दिया जाए तो जीवन में अधिक सहूलियत रहती है। कहने का आशय यह है कि बिजली के उपकरणों का सही दिशा में नहीं होना, सीधे-सीधे हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

जिस प्रकार ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा का संबंध आर्थिक समृद्धि से माना जाता है, उसी प्रकार आग्नेय कोण अर्थात दक्षिण-पूर्व दिशा का संबंध बहुत हद तक स्वास्थ्य से होता है। अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करने वाली यह दिशा बिजली उपकरणों को रखने के लिए सर्वोचित समझी जाती है। घर में प्रवेश द्वार बनाने के लिए या बोरवैल एवं शयन-कक्ष बनाने के लिए जिस तरह हम वास्तु नियमावली का अनुसरण करते हैं, उसी प्रकार बिजली उपकरणों को स्थापित करने के लिए भी वास्तु सिद्धांतों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

वास्तु की दृष्टि से महत्व की बात आती है, तो उत्तर-पूर्व के बाद बारी दक्षिण-पूर्व की है। इस कोण को वास्तुदोष से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक होता है। यह दिशा अग्नि तत्व का स्थान है। इसलिए बिजली के सभी उपकरण और मीटर, बिजली का नियंत्रण और वितरण यहीं से होना चाहिए। ऐसा करके अग्नि तत्व को संतुलन में रखा जा सकता है।

अग्नि तत्व का असंतुलित होना कई किस्म के रोगों को आमंत्रित करता है। अगर इन दोषों का निवारण न किया जाए तो कई बार साधारण बीमारियां भी गंभीर रूप ले लेती हैं और परिवार के सदस्यों को असहनीय पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

बिजली के उपकरण जैसे इनवर्टर, ट्रांसफार्मर, फ्रिज आदि ऊष्मा यानी हीट उत्पन्न करते हैं, इसलिए वास्तुशास्त्र में इनके लिए आग्नेय कोण यानी दक्षिण-पूर्व को उचित स्थान बताया गया है। रसोईघर के लिए भी यह दिशा उपयुक्त मानी जाती है।

आइए, जानते हैं आग्नेय कोण से जुड़े सामान्य वास्तु दोष और उनके निवारण के उपाय-

- अगर कोई व्यक्ति इस दिशा के गलत प्रयोग के कारण वास्तु दोषों से ग्रस्त किसी मकान में रह रहा है तो निम्न सुझावों को अपनाकर उन दोषों के नकारात्मक प्रभावों से मुक्त हो सकता है।
- अग्नि तत्व के असंतुलन से परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें, वैवाहिक और आर्थिक परेशानियां हो सकती हैं। इन खतरों को कम करने के लिए अग्नि तत्व को शांत करना आवश्यक होता है। इसके लिए दक्षिण-पूर्व कोण में सरसों के तेल का दिया जलाना चाहिए।
- सूर्योदय के समय दक्षिण-पूर्व कोण में पूर्व की ओर मुंह करके गायत्री मंत्र का जाप करने के भी लाभ होता है।
- मकान के सभी कमरों में इस दिशा को

नियंत्रित रखकर मकान के दक्षिण-पूर्व कोण में मौजूद किसी भी वास्तु दोष का निवारण किया जा सकता है। वॉशिंग मशीन, फ्रिज आदि को दक्षिण-पूर्व कोण में रखने से भी वास्तु दोष दूर हो सकते हैं।

With Best Compliments

Ajay Agarwal
Director
98290 40088

Hindustan

Ceramic Distributors

UltraTech CEMENT THE ENGINEERS CHOICE

SOMANY Tiles & Sanitaryware

Kajaria

Simpolo CERAMICS Stay ahead

JOHNSON Not just tiles, Lifestyles

EVEREST LIFEGUARD

Bell CERAMICS LIMITED

Outside Delhigate, Udaipur Ph. : 2414258, Mob. : 98290 90929
E-mail : hcd.udaipur@gmail.com

15 साल का ही देश में कच्चे तेल का भंडार

- घरेलू उत्पादन बढ़ाने के प्रयासों का नहीं दिखा असर
- आयातित क्रूड पर निर्भरता बढ़कर 87 प्र.श. हुई

नंदकिशोर

देश में कच्चे तेल के अभी तक जितने भंडार मिले हैं, वे हमारी जरूरतों को सिर्फ 15 वर्षों तक पूरा करने की क्षमता रखते हैं। यह स्थिति तब है जब हम अपनी जरूरत का 87 प्रतिशत कच्चा तेल विदेश से आयात करते हैं। यानी अगर अगले कुछ वर्षों में देश में कच्चे तेल के बड़े भंडार नहीं मिले तो हमें डेढ़ दशक बाद कच्चे तेल के लिए पूरी तरह से विदेश पर निर्भर होना पड़ेगा। यह बात पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय की एक संसदीय समिति की पिछले वर्ष के उत्तरार्द्ध में जारी रिपोर्ट में कही गई हैं। दूसरी तरफ भारत की तेज आर्थिक विकास दर को देखें तो आने वाले समय में घरेलू बाजार में पेट्रोलियम उत्पादों की खपत और बढ़ने की संभावना है। रिपोर्ट परोक्ष तौर पर इस बात की तरफ भी इशारा करती है कि पिछले दो दशकों से घरेलू स्तर पर कच्चे तकल भंडार खोजने की कोशिशों का कोई खास असर नहीं दिखा है। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2022 तक भारत में प्रमाणित तौर पर कुल 44.78 करोड़ टन कच्चे तेल का भंडार है और मौजूदा खपत के मुताबिक यह 15 वर्षों तक चलेगा। वर्ष 2016 में केन्द्र सरकार ने वर्ष 2021-22 तक कच्चे तेल पर विदेशी निर्भरता को 10 प्रतिशत घटाने का लक्ष्य रखा था। इस लक्ष्य को पाने के लिए पांच सूत्रीय फार्मूला तैयार किया गया था। हालांकि रिपोर्ट के मुताबिक साल दर साल घरेलू कच्चे तेल का उत्पादन घटना ही गया है। वर्ष 2018-19 में देश के सभी क्रूड भंडारों से संयुक्त तौर पर 3.42 करोड़ टन कच्चे तेल का उत्पादन था जो वर्ष 2021-22 में घटकर 2.97 करोड़ टन और वर्ष 2022-23 में घटकर 2.91 करोड़ टन रह गया था। 2023-24 के पहले आठ महीनों में यह घटकर 2.41 करोड़ टन ही रहा।

खपत में चीन को पीछे छोड़ देगा भारत

अंतरराष्ट्रीय एनर्जी एसोसिएशन की रिपोर्ट बताती है कि कच्चे तेल की खपत में भारत वर्ष 2027 में चीन को भी पीछे छोड़कर दुनिया का सबसे बड़ा उपभोक्ता बन जाएगा। वर्ष 2022-23 में भारत में डीजल की खपत 12.1 प्रतिशत और पेट्रोल की खपत में 13.4 प्रतिशत का इजाफा हुआ था। यह रफ्तार अगले कई वर्षों तक बने रहने की संभावना है। इसके बावजूद तेल खोज व उत्पादन की दिग्गज वैश्विक कंपनियां भारत में आने से हिचक रही हैं। जानकारों के मुताबिक इसके पीछे एक बड़ी वजह है कि क्रूड खोज व उत्खनन का काम कई दशकों का होता है। वहीं, जिस तरह से पूरी दुनिया में जीवाश्म ईंधन के खिलाफ माहौल बन रहा है, उससे विदेश कंपनियां बड़ा निवेश करने से हिचक रही हैं।

दुधमुंही ने विश्व रिकॉर्ड बनाया

आंध्रप्रदेश के नंदीगाम की रहने वाली चार महीने की बच्ची कैवल्या ने एक अनोखा विश्व रिकॉर्ड अपने नाम किया है। इस छोटी सी उम्र में वह 120 अलग-अलग चीजों को पहचान सकती है। पिता रमेश और मां हेमा ने बताया कि कैवल्या जिन चीजों को देखकर पहचान सकती है, उसमें पक्षियों, सब्जियों से लेकर जानवरों और यहां तक की तस्वीरें भी शामिल हैं। उसकी इस अनोखी क्षमता को सबसे पहले हेमा ने

पहचाना। जब हेमा ने अपनी बेटी के इस अनूठे कौशल को देखा तो सोचा क्यों न इसे दुनिया के साथ साझा किया जाए। इसके बाद उसका एक वीडियो रिकॉर्ड किया और बाद में उसे नोबेल वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के लिए भेज दिया। परिवार ने बताया कि नोबेल वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिकारी भी इस प्रतिभा को देखकर चकित थे। निर्णय लिया कि कैवल्या आधिकारिक तौर पर एक विश्व रिकॉर्ड होल्डर है।

Khiv Singh Rajpurohit
(Managing Director)
94141-04766

BKMGPL

All Kinds of Marble and Granite Block, Slabs & Tiles

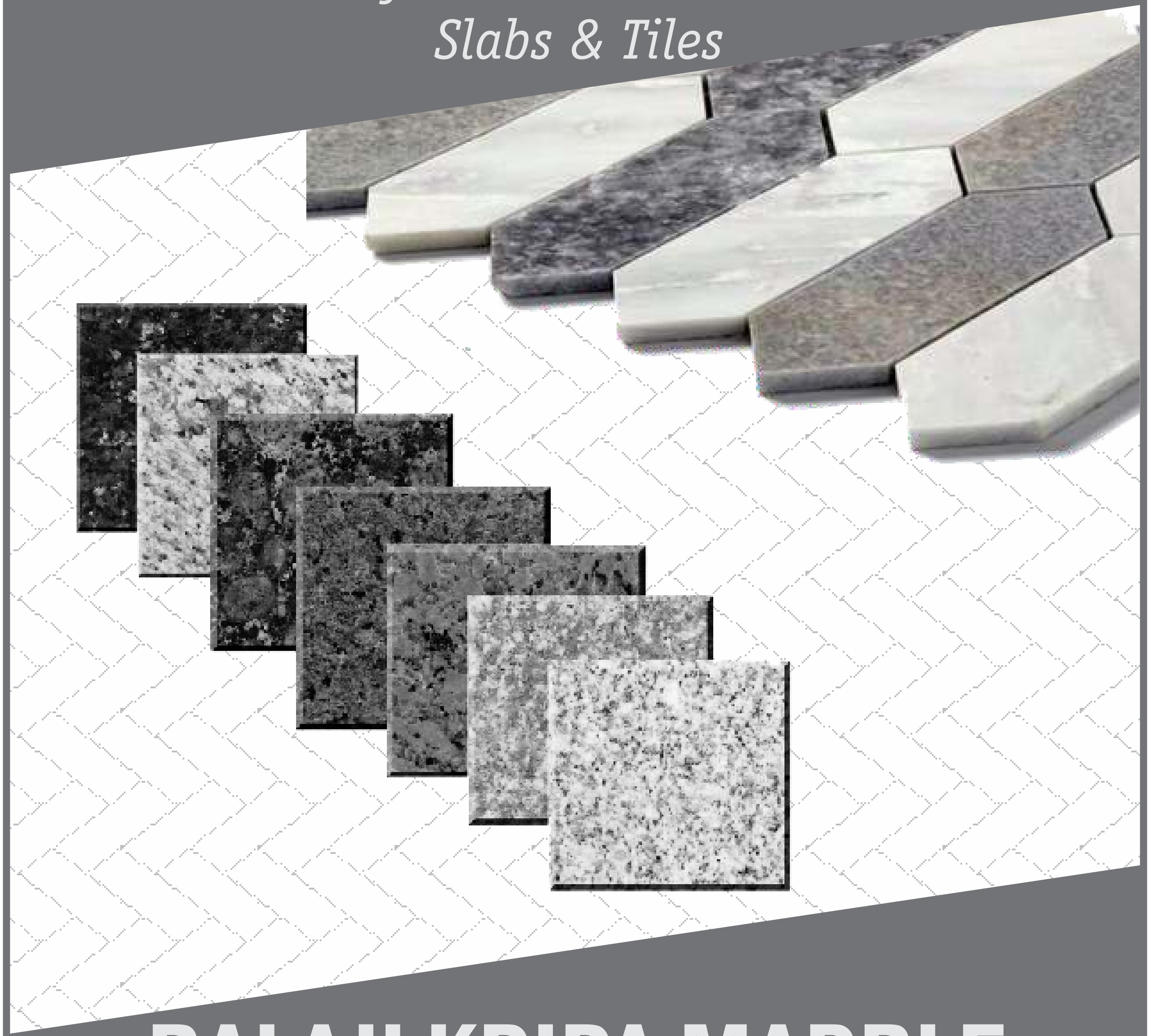

BALAJI KRIPA MARBLE & GRANITE PVT. LTD.

398-399, Sukher Industrial Area, Sukher, Udaipur (Rajasthan) India
Phone : +91-294-2442370, Fax : +91-294-2441773
e-mail: balajikripa.udr@gmail.com

'श्री राम' से ही धार्मिक फिल्मों का युगारंभ

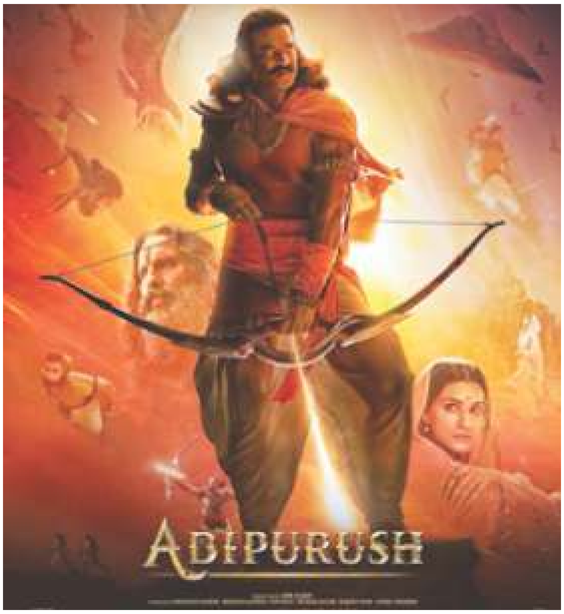

यदि धार्मिक फिल्मों के इतिहास का अवलोकन करें तो पाएंगे कि अब तक बनी सभी प्रकार की धार्मिक फिल्मों में सर्वाधिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व पर केंद्रित रही हैं, जिनमें उनके जीवन प्रसंग और उनके प्रेरणादायी गुणों व आभा मंडल का महिमा गान है।

योगेन्द्र माथुर

भगवान श्रीराम के व्यक्तित्व पर सर्वप्रथम फिल्म बनाई थी भारतीय फिल्मों के जनक दादा साहब फालके ने। सन 1917 में निर्मित यह फिल्म थी लंका दहन। इस फिल्म में राम व सीता, दोनों की भूमिका एक ही पुरुष कलाकार ने निभाई थी। अन्ना सालुंके नामक यह व्यक्ति एक होटल का कर्मचारी था। फिल्म को अपार सफलता मिली थी। सन 1919 में देश में कुल आठ कथाचित्रों का निर्माण हुआ, जिनमें तीन चित्र श्रीराम जन्म, राम और माया तथा सीता स्वयंवर श्रीराम के जीवन प्रसंग पर बने थे। 'श्रीराम जन्म' दादा साहेब फालके ने बनाई थी, राम और माया का निर्माण ओरियंटल मेन्युफेक्चरिंग कंपनी ने किया था और सीता स्वयंवर एसएन प्रभाकर द्वारा निर्देशित थी। श्रीराम जन्म के बाद दादा साहेब फालके ने दो और फिल्मों का निर्माण राम रावण युद्ध और रामराज्य वियोग नामक फिल्मों का किया। ये फिल्में उन्होंने क्रमश: 1924 और 1928 में बनाई। इसी दौर में लवकुश (1921), रामायण (1922), दशरथी राम और सीता स्वयंवर (दोनों 1929) तथा सीता हरण व *लंका दहन (दोनों 1930) आदि फिल्में भी पर्दे पर दिखाई दीं। मूक फिल्मों को आवाज मिलने के साथ ही एक बार पुन: निर्मातागण श्रीराम के व्यक्तित्व की ओर आकर्षित हुए। सन 1933 में एक साथ तीन फिल्में लंका दहन, रामायण व सीता स्वयंवर श्रीराम के जीवन चरित्र पर बनीं। सन 1934 में देवकी बोस द्वारा निर्देशित 'सीता' को श्रीराम के जीवन संदर्भ में बनी अब तक की फिल्मों में श्रेष्ठ फिल्म माना गया। रामायण (1934), सीता हरण (1936) और राम संग्राम (1939) फिल्में बनीं और काफी पसंद की गईं। सन 1942 और 1943 में श्रीराम के व्यक्तित्व को लेकर क्रमश: दो श्रेष्ठ फिल्में भरत मिलाप व राम राज्य प्रदर्शित हुईं। इन दोनों फिल्मों का निर्माण प्रकाश पिक्चर्स तथा निर्देशन विजय भट्ट ने किया था। इसके बाद सन 1946 में सती सीता, सन 1948 में सीता स्वयंवर व श्रीराम भक्त हनुमान, सन 1949 में राम प्रतिज्ञा, सन 1950 में राम दर्शन व श्रीराम अवतार तथा सन 1951 में श्रीराम दर्शन जैसी फिल्में लगभग एक-एक वर्ष के अंतराल में प्रदर्शित हुईं। राम बाण (1948) और राम विवाह (1949) जैसी फिल्में भी दर्शकों की सराहना का पात्र बनीं। सन 1951 में फिल्म हनुमान पाताल बनी। सन 1951 के पश्चात लंका दहन, राम धुन, राम राज्य, राम लीला, श्रीराम भरत मिलाप और राम-लक्ष्मण आदि फिल्में प्रदर्शित हुईं। सन 1957 में फिल्म पवनपुत्र हनुमान आई। सन 1961 में वाडिया बंधुओं द्वारा निर्मित सम्पूर्ण रामायण लोकप्रिय फिल्म थी। 1961 में श्री भरत मिलाप प्रदर्शित हुई। सन 1965 में राम-भरत मिलाप फिल्म प्रदर्शित हुई। सन 1967 में विजय भट्ट ने फिल्म राम राज्य (1943) को रंगीन स्वरूप में पुनर्निर्मित किया। राम बाण (1968), राम भक्त हनुमान (1969), बजरंगबली (1976) व महाबली हनुमान (1981) जैसी फिल्में प्रदर्शित हुईं।। अस्सी के दशक में जब टेलीविजन घर-घर पहुंचा और कथा धारावाहिकों के प्रदर्शन का सिलसिला आरंभ हुआ तो हिंदी सिनेमा के प्रख्यात फिल्मकार रामानंद सागर रामायण के कथानक को लेकर टीवी पर आए। उनके 87 एपिसोड वाले 'रामायण' धारावाहिक का 25 जनवरी 1987 को टीवी पर प्रसारण शुरू हुआ और देखते ही देखते इसने लोकप्रियता के सारे रिकार्ड तोड़ दिए । स्थिति यह थी कि 'रामायण' प्रदर्शन के समय भारत के हर घर में पूरा परिवार टीवी के सामने बैठ जाता था और सड़कों पर कर्फ्यू-सी स्थिति बन जाती थी। विगत कोरोना काल के दौरान इस धारावाहिक का दूरदर्शन पर पुनर्प्रसारण किया गया तब भी इसे खासी लोकप्रियता मिली। हाल ही में प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक ओम राउत पांच भाषाओं हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में बनी फिल्म आदिपुरुष को भी बड़ी सफलता मिली। वर्तमान में सोनी चैनल पर प्रसारित हो रहा धारावाहिक श्रीमद् रामायण दर्शकों का को काफी पसंद आ रहा है।

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- Situated in Heart of City
- Homely Atmosphere
- Rooms Connected with Telephone
- A/C & Cooler Rooms
- T.V. With Cable Connection
- Near to bus & Railway Station

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

संयम तप के उपदेशक तीर्थंकर ऋषभदेव

भगवान ऋषभदेव को काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। वे आज भी भारत की लोक स्मृतियों में पूर्णतः सुरक्षित हैं..... 2 अप्रेल को उनकी जयंती पर उदयपुर जिले के केशरिया जी कस्बे में परम्परागत भव्य मेला आयोजित होगा।

प्रो. अनेकांत जैन

ऐसा विराट व्यक्तित्व दुर्लभ रहा है, जो एक से अधिक परम्पराओं में समान रूप से मान्य व पूज्य रहा हो। भगवान ऋषभदेव उन दुर्लभ महापुरुषों में से एक हैं। जैन परम्परा के अनुसार, काल का न आदि है, न अंत। जन-जन की आस्था के केन्द्र तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म चैत्र कृष्ण नवमी को अयोध्या में तथा माघ कृष्ण चतुर्दशी को इनका निर्वाण कैलाश पर्वत पर हुआ था। आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन चरित का विस्तार से वर्णन है।

भागवत् पुराण में उन्हें विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माना गया है। वे आग्नीध्र राजा नाभि के पुत्र थे। माता का नाम मरुदेवी था। दोनों परम्पराएं उन्हें इक्ष्वाकुवंशी और कोसलराज मानती हैं। जैन तीर्थंकर ऋषभदेव को अपना प्रवर्तक तथा प्रथम तीर्थंकर मानकर तो पूजा करते ही हैं, किंतु भागवत् भी घोषणा करता है कि नाभि का प्रिय करने के लिए विष्णु ने मरुदेवी के गर्भ से वातरशना ब्रह्मचारी ऋषियों को धर्म का उपदेश देने के लिए ऋषभ देव के रूप में जन्म लिया। भगवान ऋषभदेव ने भारतीय संस्कृति को जो कुछ दिया है, उसमें असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प शामिल हैं। इन छह कर्मों के द्वारा उनहोंने जहां समाज को विकास का मार्ग सुझाया, वहीं अहिंसा, संयम तथा तप के उपदेश द्वारा समाज की आंतरिक चेतना को भी जगाया। भारतीय संस्कृति को जो योगदान उन्होंने दिया, उसकी चर्चा संसार के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में भी मिलती है। आत्मा ही परमात्मा है, यह घोषणा भारतीय संस्कृति को उन धर्मों से अलग करती है, जिनमें कहा गया है कि जीव कभी परमात्मा नहीं हो सकता। भारतीय चिंतन में जो आत्मा है, वही परमात्मा है- 'अप्पा से परमप्पा।' ऋषभदेव का यह स्वर इतना बलवान था कि केवल जैनों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे भारतीय चिंतन में व्याप्त हो गया। उपनिषदों ने भी घोषणा की- 'अयम् आत्मा ब्रह्म।' वेदांत ने तो यहां तक कहा कि सब शास्त्रों का सार यही है कि जीव ही ब्रह्म है- 'जीवो ब्रह्मैवनापर:।' इस तथ्य के अन्वेषण में भगवान ऋषभदेव का महत्वपूर्ण योगदान है।

उदयपुर (राजस्थान) से करीब 75 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित प्राचीन ऋषभदेव मंदिर में प्रतिवर्ष भव्य मेला भरता है। मंदिर में भगवान ऋषभदेव की श्यामवर्ण प्रस्तर की भव्य प्रतिमा है।

Prateek Khicha, Director

KHICHA PHOSCHEM LTD.

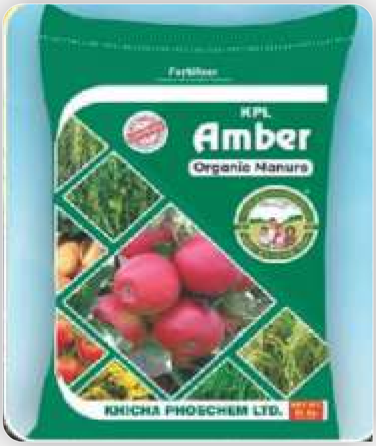

Manufactures & Suppliers of

Rock Phosphate, Gypsum, All other Minerals & Fertilizers
(Mining, Crushing, Grinding & Transport contractors)
Organic Fertilizer, Prom, Soil Conditioner,
Natural Organic Potash

Kisan Hoga Khushaal, Jab Karega Amber Khad Ka Istemal

204, Vinayak Business Centre, 2nd Floor, Fatehpura-Pula Road, Udaipur - 303001 (Raj.)
M.: 9829062804, 7737572626 E-mail: khichaphoschem@rediffmail.com
Works: Village Umra, Jhamar Kotra Road, Dist. Udaipur (Raj.)

संकट मोचन नाम तिहारो

श्रीराम भक्त हनुमान सर्वगुण सम्पन्न हैं। अखंड ब्रह्मचर्य, बुद्धिमता, विद्वता, चतुरता, बल-पौरूष, साहस और सदाचार आदि गुणों से परिपूर्ण हैं। वे भक्ति और शक्ति का बेजोड़ संगम हैं।

चैत्र मास की पूर्णिमा पर भगवान राम की सेवा के उद्देश्य से भगवान शंकर के ग्यारहवें रुद्र ने अंजना के घर हनुमान के रूप में जन्म लिया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमनजी को प्रसन्न करने के लिए शनि को शांत करना चाहिए। जब हनुमानजी ने शनिदेव का घमंड तोड़ा था तब सूर्यपुत्र शनिदेव ने हनुमानजी को वचन दिया कि उनकी भक्ति करने वालों की राशि पर आकर भी वे कभी उन्हें पीड़ा नहीं देंगे। कन्या, तुला, वृश्चिक और अढैया शनि वाले तथा कर्क मीन राशि के जातकों को हनुमान जयंती पर विशेष आराधना करनी चाहिए।

अष्टचिरंजीवी में शुमार : हनुमानजी का शुमार अष्टचिरंजीवी में किया जाता है, यानी वे अजर-अमर देवता हैं। उन्होंने मृत्यु को प्राप्त नहीं किया। ऐसे में अमृतयोग में उनकी जयंती पर पूजन करना ज्यादा फलदायक होगा। बजरंगबली की उपासना करने वाला भक्त कभी पराजित नहीं होता। हनुमानजी का जन्म सूर्योदय के समय बताया गया है इसलिए इसी काल में उनकी पूजा-अर्चना और आरती का विधान है।

शरीर को लाभ : हनुमानजी की उपासना व चोला चढ़ाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। जिन लोगों को शनिदेव की पीड़ा हो उन्हें बजरंग बली को तेल-सिंदूर का चोला अवश्य चढ़ाना चाहिए। हनुमानजी अपने भक्तों की सच्चे मन से की गई हर तरह की मनोकामना पूरी करते हैं और अनिष्ट करने वाली शक्तियों को परे रखते हैं। प्राय : शनिवार व मंगलवार हनुमानजी के दिन माने जाते हैं। आध्यात्मिक उन्नति के लिए वाममुखी अर्थात जिसका मुख बाईं तरफ ओर हो हनुमान या दास हनुमान की मूर्ति को पूजा में रखने का रिवाज है। दास हनुमान और वीर हनुमान बजरंग बली के दो रूप बताए गए हैं। दास हनुमान राम के आगे हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं और उनकी पूंछ जमीन पर रहती है जबकि वीर हनुमान योद्धा मुद्रा में होते हैं और उनकी पूंछ उठी रहती हैं। दाहिना हाथ सिर की ओर मुड़ा हुआ रहता है। कहीं-कहीं उनके पैरों तले राक्षस की मूर्ति भी होती हैं।

-उदय प्रजापत

वरुणावतार

संस्कृति के संस्कार का अनूठा पर्व. चेटीचंड

वासुदेव देवनानी

भारतीय संस्कृति पर्व प्रिय है। धर्म आधारित इस धरा में देश-काल व स्थिति के अनुसार यह संस्कृति तरह-तरह के रूप लिए हुए आगे बढ़ती रहती है। देखा जाए तो हमारी संस्कृति का सीधा व गहरा जुड़ाव प्रकृति से रहता है। वरूण देव के अवतार रूप में झूलेलाल जी का पर्व भी संस्कृति का अनूठा संस्कार पर्व है। बड़ी बात यह भी है कि यह पर्व पर्यावरण संरक्षण की आधुनिक दृष्टि से भी जुड़ा है। भगवान झूलेलाल पंच तत्वों से बनी सृष्टि में संतुलन और संयम का संदेश देने वाले हैं। खास तौर से ऐसे दौर में जब हमने पिछले तीन साल में कोरोना महामारी का प्रकोप झेला है और समूचा विश्व जलवायु संकट से जूझ रहा है, वे और भी प्रासंगिक हैं। त्याग, संयम और तपस्या के साथ वरूण के अवतार लालसाई की पूजा पारिस्थितिकी संतुलन का संदेश देने वाली है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर पश्चिम आज चिंतित दिखाई देता है, लेकिन भारतीय पर्वों और त्योहारों में यह विषय सदियों से नजर आता है।

सिंधी समाज से जुड़े लोगों का व्यापार से आरंभ से ही नाता रहा है। जलमार्ग से सुदूर स्थानों की यात्रा करते समय उन्हें प्रारंभिक दौर में बहुत विपदाओं का सामना करना पड़ता था। समुद्री तूफान, जीव-जंतु, चट्टानें व समुद्री दस्यु गिरोह इन कारोबारियों का सब कुछ लूट लेता था। ऐसे समय में यात्रा के लिए प्रस्थान करने से पहले घर की महिलाएं वरूण देवता की स्तुति करती थीं। जल के देवता भगवान झूलेलाल की आराधना कारगर होती थी। इस तरह देश में चेटीचंड को उत्सव के रूप में मनाने की शुरूआत हो गई।

वर्ष का प्रारम्भ हमारे यहां वर्ष प्रतिपदा से होता हैं। यही चेटीचंड है। सिंधी में चैत्र मास को चेट कहा जाता है और चांद को चण्ड। चेटीचंड का अर्थ है चैत्र का चाद। युगों-युगों से सृष्टि की शुरूआत का दिन चैत्र का यह परम पवित्र दिन ही माना जाता है और मनाया जाता है। सुखद आश्चर्य यह है कि मोहम्मद बिन कासिम से लेकर अंग्रेजों तक ने हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया, पर सनातन परंपरा के इस पर्व को सिंधी समाज ने विषम से विषम परिस्थिति में भी नहीं छोड़ा जब प्रकृति की बात आती है, तो झूलेलाल साक्षात् वरुण देव हैं। भारतीय संस्कृति में जल को आरंभ से ही पूजा जाता रहा है। यह माना जाता है कि जल से ही सभी सुखों की प्राप्ति होती है। जल-ज्योति, वरुण अवतार, झूलेलाल सिंधी समाज के ही नहीं, भारतीय धर्म में आस्था रखने वाले सभी हिन्दुओं के लिए भी पूज्य हैं। इसलिए कि वह सुख-शांति, और चहुं दिशाओं में हरियाली और खुशहाली बनाएं रखते हैं।

सभी ऋतुओं के महात्म्य के साथ उनके पूजन की परंपरा भारतीय संस्कारों की मौलिक दृष्टि है। इसीलिए तो कहीं वह झूलेलाल, कहीं पर उदेरोलाल हैं, तो कहीं घाड़ेवारों, जिन्दपीर, लालसाई, पल्लेवारों, ज्योतिनवारो, अमरलाल के नाम से भी पूजे जाते हैं। झूलेलाल असल में जल और ज्योति का अवतार हैं। जल और ज्योति के महत्व का अर्थ ही है, प्रकृति का संतुलन।

विक्रम संवत 1007 वर्ष यानी 951 ईस्वी में सिंध प्रात के नसरपुर नगर में रतन राय के घर माता देवकी के गर्भ से भगवान के रूप में बालक उदयचंद्र के रूप में झलेलाल जी पैदा हुए। उन्होंने पापियों का नाश कर धर्म की रक्षा की। इसी उपलक्ष में चेटीचंड का पर्व मनाया जाता है। वस्तुतः चेटीचंड प्रकृति और जीवन के सरोकारों से जुड़ा पर्व है।

(लेखक राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

HOTEL RAJKAMAL INTERNATIONAL

123- Bye Pass Road, Bhuwana,
Udaipur (Raj.)
Ph.: 0294-2440770, 2440085,
9649244085
E-mail: rajkamaludr@gmail.com
Website: www.hotelrajkamal.com

For Your Comfortable Stay

गर्मी में बनाएं ठंडी तासीर वाले स्वादिष्ट मुरब्बे

स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद मौसमी फल-सब्जियों को जहां हम अपने दैनिक आहार में शामिल करते हैं, वहीं खाद्य-संरक्षण या फूड-प्रिजर्वेशन के कई तरीकों से इन्हें सुरक्षित भी कर लेते हैं और लम्बे समय तक इनका स्वाद लेते रहते हैं। फल-सब्जियों से बने मुरब्बों में अनेक ऐसे भी हैं जो गर्मियों की मार से बचाने में भी काफी कारगर साबित होते हैं।

रजनी अरोड़ा

पोषक तत्वों और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर मुरब्बे हमारे स्वास्थ्य के लिए ही फायदेमंद नहीं, खूबसूरती बढ़ाने में भी सहायक हैं। ये हमारे शरीर को एनर्जी देने के साथ-साथ इम्यूनिटी बूस्टर का भी काम करते हैं। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा में तो इन्हें दवा की तरह इस्तेमाल किया जाता है। ठंडी तासीर लिए इन मुरब्बों का इस्तेमाल गर्मी के मौसम में कई बीमारियों को दूर रखने में सहायक है।

आंवला मुरब्बा

गोलाकार, पीले और हरे नीबू के आकार का आंवला विटामिन सी, अमीनो एसिड, लिपिड और तांबा, जस्ता जैसे मिनरल्स का भंडार है। इसके नियमित सेवन से हमारे पाचन तंत्र और इम्यून सिस्टम मजबूत होते हैं। यह फेफड़ों को मजबूती देता है। इसके इस्तेमाल से सांस संबंधी संक्रामक बीमारियों से लड़ने में मदद मिलती है। यह एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के कारण ह्रदय, लीवर संबंधी बीमारियों की रोकथाम में लाभदायक है। आंवले के मुरब्बे में मौजूद विटामिन भी शरीर में कैल्शियम और आयरन के अवशोषण को बढ़ावा देता है। इससे सर्दी-जुकाम और कफ में आराम मिलता है और हड्डियां, दांत, नाखून और बाल मजबूत और स्वस्थ होते हैं। इसके इस्तेमाल से कोलेजन फाइबर के गठन में मदद मिलती है, जो जोड़ों के दर्द में आराम पहुंचता है। यह पाचन प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने में सहायक और पेट दर्द, अम्लता, कब्ज या पेट में गैस, उल्टी, सिर दर्द जैसी पेट संबंधी समस्याओं में फायदेमंद है।

यह एक रसायनिक टॉनिक है, जिससे बच्चों की याददाश्त और गर्भवती महिलाओं में खून की कमी तथा रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करता है। बाल झड़ने, बाल असमय सफेद होने जैसी समस्याओं में मुरब्बे का सेवन काफी कारगर है। इससे कफ और पित्त में आराम मिलता है। हमारे शरीर में बढ़ती उम्र के साथ पड़ने वाली झुर्रियों, नजर कमजोर होने जैसे प्रभावों को भी यह कम करता है।

गाजर का मुरब्बा

एंटी ऑक्सीडेंट तत्वों से भरपूर गाजर के मुरब्बे के नियमित सेवन से हाई ब्लड प्रेशर और ह्रदय संबंधी बीमारियों का खतरा कम रहता है। यह लंबी बीमारी के बाद शरीर को तंदुरुस्त बनाने में सहायक साबित होता है। शरीर में आयरन की पूर्ति कर खून की कमी को पूरा करता है और स्फूर्ति प्रदान करता है। शीतल प्रभाव के कारण गाजर का मुरब्बा पेट की जलन, दर्द, भूख न लगने जैसी पेट की तकलीफों में भी आराम पहुंचता है। इसमें मोजूद बीटा कैरोटीन और विटामिन ए जैसे पोषक तत्व कैंसर और रतौंधी को रोकने में मदद करते हैं। यह आंखों की रोशनी बढ़ाने में सहायक है। बीटा कैरोटीन सूरज की यूवी किरणों से त्वचा को होने वाले नुकसान को कम करता है।

कच्चे आम या केरी का मुरब्बा

फिनोलिक नामक एंटी ऑक्सीडेंट गुण से भरपूर आम का मुरब्बा शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता के विकास में सहायक है।

सेवन में संयम

हालांकि विभिन्न तरह के मुरब्बे शरीर में पोषक तत्वों की जरूरत को पूरा करते है, फिर भी इनमें कैलरी और शर्करा काफी मात्रा में होती है। इसलिए इनका सेवन एक सीमा में ही करना श्रेयस्कर है। एक चम्मच मुरब्बे से 8-10 मिलीग्राम कैल्शियम, 1-2 मिलीग्राम विटामिन सी और 12-15 आइयू विटामिन ए की जरूरतें पूरी होती हैं। वैज्ञानिक शोधों से साबित हो चुका है कि एक वयस्क व्यक्ति को रोजाना 1000-1200 मिलीग्राम कैल्शियम, 80-90 मिलीग्राम विटामिन सी और 2500-3000 आइयू विटामिन ए की जरूरत होती है। सर्दी-जुकाम और बुखार से पीड़ित व्यक्ति को ठंडी तासीर वाले इन मुरब्बों को खाने से बचना

चाहिए। डायबिटीज के रोगी को इन मुरब्बों का सेवन करते समय चीनी सिरप कम से कम मात्रा में लेना चाहिए, ताकि उन्हें ब्लड में शुगर लेवल बढ़ने का खतरा न रहे। वजन बढ़ाने में सहायक होने पर भी इन्हें सीमित मात्रा में ही खाना चाहिए।

हरड़ का मुरब्बा

हरड़ के मुरब्बे के नियमित सेवन से चोट या घाव होने पर जल्द आराम मिलता है। यह सूजन को कम करता है। यह भूख न लगने, पेट में कीड़े होने और पाचन संबंधी समस्याओं में राहत दिलाता है। जठरांत्र रोगों, ट्यूमर, बवासीर, मूत्र विकारों और मुत्राशय की पथरी में हरड़ के मुरब्बे का सेवन काफी लाभदायक होता है। मुरब्बे को गुड़ के साथ सेवन करने पर गठिया में सुधार हो सकता है।

बेल का मुरब्बा

बेल में मौजूद टेनिन और रेचक गुण पेचिश, हैजा, डायरिया जैसी स्थितियों में प्रभावकारी है। विटामिन और खनिज तत्वों से समृद्ध इस मुरब्बे का नियमित सेवन पेट के रोगों के खिलाफ लड़ने में प्रभावी भूमिका अदा करता है व पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है।

सेव का मुरब्बा

यह दिल के लिए एक स्वस्थ नुस्खा है। सुबह खाली पेट सेब का मुरब्बा खाकर ह्रदय रोग के जोखिम को कम किया जा सकता है। इसमें मौजूद फ्लेवोनॉयड फेफड़ों के कैंसर के जोखिम को कम करता है। शरीर की शिथिलता और मानसिक तनाव को नियंत्रित रखता है। सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, भूलने की स्थिति में सेब का मुरब्बा कारगर है। रात में गर्म दूध के साथ सेब का मुरब्बा लेने से अनिद्रा की स्थिति पर काबू पाया जा सकता है। इसमें मौजूद विटामिन सी स्कर्वी नामक रोगों के इलाज में मददगार है। इसके सेवन से खांसी में भी राहत मिलती है। सेब का मुरब्बा त्वचा और बालों के लिए बहुत उपयोगी है। उम्र बढ़ने के साथ शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों जैसे चेहरे पर पड़ने वाले, प्रभावों जैसे चेहरे पर झुर्रियां पड़ना, कमजोरी महसूस होना, बाल झड़ना और उनके असमय सफेद होने जैसी समस्याओं के इलाज में यह काफी कारगर है। कोलाइडियन नामक आयरन से भरपूर सेब का मुरब्बा एनीमिया से ग्रस्त लोगों, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए फायदेमंद है।

अठारहवीं पुण्यतिथि पर

हार्दिक श्रद्धांजलि

परम श्रद्धेय आदरणीय

आनन्दीलाल जी शर्मा

(उपाचार्य, लोकमान्य तिलक बी.एड कॉलेज डबोक, उदयपुर)
(पूर्व प्राचार्य आर. एम. वी. बी. एड, कॉलेज, उदयपुर)
(पूर्व, प्राचार्य हरिभाऊ उपाध्याय महिला बी. एड कॉलेज, हटून्डी, अजमेर)

|| श्रद्धानवत ||

पंकज-रेणु, नीरज-डॉ. अनिता (पुत्र-पुत्रवधु), अभिजय, मेघांश (पौत्र), आर्षेयी, प्रिशा (पौत्री) शोभा-सुरेन्द्र, सुधा-ओम, डॉ.वीणा-स्व. गौरव, अरुणा-पद्म, रश्मि-अनिल (पुत्री-दामाद) दोहित्र-दोहित्री :- प्रत्यूष, मोहित, स्व. चिन्मय, तन्मय, भार्गवि, नयन नारायण, पूर्वा, हार्दिक, चिर्कीषु, जिगिषा

जन्मः 28.11.1927
निधनः 05.04.2006

रक्षाबन्धन, धानमण्डी,उदयपुर

ग्रीष्म ऋतु की अधिकृत अगवानी है शीतलाष्टमी

शीतला अष्टमी का पर्व सांस्कृतिक रूप से देखें तो ग्रीष्म ऋतु अगवानी की अधिकृत घोषणा है। यह पर्व उत्तर भारत के करीब-करीब सभी क्षेत्रों में मनाया जाता है। साथ ही देश के दूसरे क्षेत्रों में भी यह अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इस दिन शक्ति के एक अन्यतम रूप मां शीतला का पूजन अर्चन किया जाता है। इस दिन की एक खासियत है कि बासी भोजन खाया जाता है। यहां तक कि मां का भोग भी बासी भोजन से ही लगाया जाता है। यही बासी भोजन नेवैद्य के रूप में भी समर्पित होता है। राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के कुछ इलाकों में इसे बास्योड़ा भी कहा जाता है। कई जगहों पर इसे बासा भात भी कहते हैं। दरअसल इन नामों और इस उद्यम का एक ही संदेश है कि इस दिन के बाद से बासी भोजन का सेवन बिल्कुल बंद कर दें। शीतला अष्टमी के बारे में स्कंद पुराण में कहा गया है कि देवी मां शीतला ने अपने एक भक्त को ज्वर जनित असाध्य बीमारी से मुक्त किया था। तभी से अत्यधिक गर्मी ऋतु में लोग गर्मी से बचने के लिए मां शीतला की पूजा करते हैं। इसकी शुरुआत होली के आठवें दिन यानी चैत्र माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुरू होती है। गर्मी शुरू होने के पहले ही लोग मां शीतला की पूजा आराधना शुरू करके अव्यक्त रूप में गर्मी से निजात पानी की कामना करते हैं। कुछेक इलाकों में इसे सप्तमी के दिन भी मनाया जाता है। शीतला मां की पूजा-अर्चना चैत्र माह से शुरु होकर आषाढ़ माह तक होती है। आषाढ़ माह की अष्टमी को पूजा समाप्त होती है। इस पूरे समय विशेष ध्यान स्वच्छता का रखा जाता है। इस तरह देखें तो कहना चाहिए कि मां शीतला की उपसना स्वच्छता के प्रति समर्पित होने का भाव है। शीतला मां गर्दभ पर सवारी करती हैं। सूप और झाड़ू मां शीतला के दो प्रिय अस्त्र हैं और नीम की पत्तियां उनका वस्त्र या वसन है। ये सारे संकेत भयानक गर्मी से झुलसते उत्तर भारत के लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से शीतल रहने की प्रक्रिया को समझाने जैसा है। डॉक्टर बार-बार कहते हैं कि गर्मी के महीने में नीम के पेड़ के नीचे बैठें। नीम की पत्तियां पानी में डालकर नहाएं या किसी तरीके से नीम के सम्पर्क में रहें। शायद इसीलिए मां शीतला ने अपने वस्त्रों को नीम वस्त्र के रूप में दिखाकर लोगों को नीम की महिमा बताने की कोशिश की है।

-आर.सी. शर्मा

भक्ति का ज्वार

अयोध्या में रामलला विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अमेरिका, यूएई, आस्ट्रेलिया सहित कई देशों में पढ़ी गई श्रीरामचरितमानस

15 दिन में 17 लाख से अधिक लोगों ने ग्रंथ को सर्च किया

राजवीर

देश-दुनिया के लगभग सवा दो लाख लोगों ने 15 दिन में श्रीरामचरितमानस पढ़ी। वहीं 17 लाख से अधिक लोगों ने इस ग्रंथ को वेबसाइट पर सर्च किया। इनमें भारत के अलावा अमेरिका, कनाडा, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, सिंगापुर, जर्मनी आदि देशों के लोग भी शामिल हैं। अयोध्या में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के बाद श्रीरामचरितमानस व भगवान राम से जुड़ी अन्य पुस्तकों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है। इन ग्रंथों की मांग बढ़ने और उसकी सापेक्ष प्रतियां उपलब्ध न हो पाने के कारण गीता प्रेस ने इन्हें निशुल्क पढ़ने और डाउनलोड करने के लिए 16 से 31 जनवरी तक 15 दिन के लिए अपनी वेबसाइट पर अपलोड किया था। इस दौरान दो लाख 24 हजार 714 लोगों ने श्रीरामचरितमानस पढ़ी और 68 हजार 461 लोगों डाउनलोड किया, जबकि 17 लाख से अधिक लोगों ने इस ग्रंथ को वेबसाइट पर सर्च किया। अमेरिका में 17643, कनाडा में 3518, यूनाइटेड किंगडम में 2048, यूनाइटेड अरब अमीरात में 1690, ऑस्ट्रेलिया में 1561, सिंगापुर में 776, जर्मनी में 591, नेपाल में 572, त्रिनिदाद और टोबेगो में 1656 लोगों ने श्रीरामचरितमानस डाउनलोड कर पढ़ी। गीता प्रेस की वेबसाइट पर हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, बांग्ला, नेपाली, मराठी सहित 10 भाषाओं में श्रीरामचरितमानस, अयोध्या महात्म्य और अयोध्या दर्शन पुस्तकें अपलोड की गई थीं।

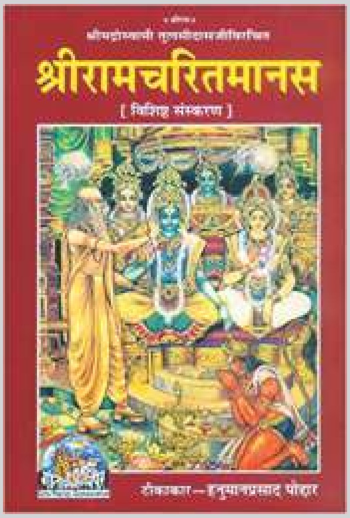

गीता प्रेस की वेबसाइट पर श्रीरामचरितमानस के सभी भाषाओं के संस्करणों सहित पांच सौ धार्मिक पुस्तकें अपलोड हैं, जिन्हें हजारों पाठक प्रतिदिन पढ़ रहे हैं। भारत के साथ अन्य देशों में भी सनातन धर्म के प्रति लोगों की आस्था और गीता प्रेस की विश्वसनीयता बढ़ी है।

—लालमणि तिवारी, गीता प्रेस

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

मेष

ग्रहों की स्थिति मिश्रित फल देने वाली है, बेहतर सफलता के लिए माह के अंत में महत्वपूर्ण कार्यों का निष्पादन करें। कार्य क्षेत्र में आप एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में कार्य करेंगे। संतान पक्ष से चिंता, स्वास्थ्य सामान्य, विद्यार्थी वर्ग में असंतोष रहेगा।

वृषभ

मानसिक शांति प्राप्त करने का प्रयास करें। आखिर फल मिलेगा। माह के अन्त में अप्रत्याशित कठिनाइयां सामने आ सकती हैं। नइ वस्तुओं के प्रति आकर्षण बढ़ेगा, अपनी कला के प्रसार में आपको लाभ मिल सकता है।

मिथुन

लम्बित योजनाएं धरातल पर उतरेंगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी, पारिवारिक मतभेद को मधुरता एवं संयम से सुलझाने का यत्न करें। भ्रम की स्थिति, आय से खर्च में अधिकता रहेगी। सामाजिक रूप से व्यस्त रहेंगे स्वास्थ्य मिश्रित फल देगा, ध्यान दें।

कर्क

अपने व्यवहार को संतुलित रखे अन्यथा विरोधियों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। अत्यधिक आत्मविश्वास नुकसानदेह हो सकता है, पारिवारिक समस्या की बाहर चर्चा न करें। मांगलिक कार्य संभव, नए उद्यम व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा।

सिंह

कार्य क्षेत्र मं अगर खुद को पहले से अच्छी तरह से तैयार कर लेंगे तो सफलता मिलेगी, अपने कार्य क्षेत्र में अवांछित उपक्रमों से बचे, एवं आहार पर नियंत्रण रखें, अपनी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के नये प्रयास करेंगे, पारिवारिक सहयोग से सम्बल मिलेगा।

कन्या

इस माह में पारिवारिक सुख एवं स्वास्थ्य में बदलाव की संभावना है, किसी भी बात को तुल न दें, विरोधी हावी होने का प्रयास करेंगे। लक्ष्य निर्धारित करने एवं भविष्य की योजनाएं बनाने का यह समय उचित रहेगा, दूसरों से अधिक सहयोग न मिलने से असंतोष रहेगा।

तुला

इस माह का प्रारंभ अच्छी संभावनओं के साथ होगा। धन से ही सारी समस्या हल हो सकती है, यह धारणा त्याग दें अन्यथा मुसीबत में पड़ेंगे। नौकरी एवं व्यावसाय में प्रगति, सावधानी से आगे बढ़ें, यह पारिवारीक सम्बंध भी अच्छे रहें।

पं. शोभालाल शर्मा

इस माह के पर्व/त्योहार

1 अप्रेल	चैत्र कृष्ण सप्तमी	शीतला सप्तमी / शहादत-ए हजरत अली
2 अप्रेल	चैत्र कृष्ण अष्टमी	शीतलाष्टमी /ऋषभदेव जयंती /केशरिया जी मेला
4 अप्रेल	चैत्र कृष्ण दशमी	दशामाता व्रत पूजा
7 अप्रेल	चैत्र कृष्ण त्रयोदशी/चर्तुदशी	शब्बे कद्र / स्वास्थ्य दिवस
8 अप्रेल	चैत्र कृष्ण अमावस्या	ज्योतिबा फूले जयंती
9 अप्रेल	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	नवरात्रि घट स्थापना/ हेगडेवार जयंती
10 अप्रेल	चैत्र शुक्ल द्वितीया	झूलेलाल जयंती (चेटीचंड)
11 अप्रेल	चैत्र शुक्ल तृतीया	ईद-उल-फित्र /गणगौर
14 अप्रेल	चैत्र शुक्ल पष्ठी	डॉ. अम्बेडकर जयंती
16 अप्रेल	चैत्र शुक्ल अष्टमी	दुर्गाष्टमी पूजा
17 अप्रेल	चैत्र शुक्ल नवमी	रामनवमी
21 अप्रेल	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी	भगवान महावीर जयंती
23 अप्रेल	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा	हनुमान जयंती
29 अप्रेल	वैशाख कृष्ण पंचमी	गुरू तेग जयंती
30 अप्रेल	वैशाख कृष्ण पष्ठी / सप्तमी	गुरू अर्जनदेव जयंती

वृश्चिक

अपनी आर्थिक स्थिति पर ध्यान देंवे। माह के अन्त में अनुकूल स्थिति में वृद्धि होगी, लम्बित काम पर होने लगेगे, आप प्रतिपक्षी को आसानी से परास्त कर पायेंगे। पहल करने और व्यक्तिगत लक्ष्य हासिल करने के समय का लाभ उठावें, स्वास्थ्य सामान्य।

धनु

सही समय और सही तरीके से किये नये प्रयास आपको सफलता दिलाएंगे। घर के माहौल का असर व्यवसाय पर न पड़ने दें। स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें। धनार्जन संतोषजनक रहेगा, रचनात्मक कार्यो में आगे बढ़ सकेंगे, भावात्क सम्बंधों का लाभ मिलेगा।

मकर

कला के क्षेत्र में आपका नाम और प्रसिद्ध होगा। सामाजिक क्षेत्र में मान–सम्मान के योग बनेंगे, सेवा एवं व्यापार के क्षेत्र में प्रगति बहुत अच्छी रहेगी। सपने साकार होंगे, नये लोगों के साथ सम्बंध भविष्य में लाभकारी रहेंगे।

कुम्भ

काम में सक्रियता एवं लगातार प्रयास आपको सफलता दिलायेंगे। अपने निकटवर्तियों से भेदभाव न करें। कृषि क्षेत्र में आपको अपार सफलता मिल सकती है, परिस्थितियां पक्ष में रहेंगी, बस धैर्य के साथ आगे बढ़े, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा अपने आहार–विहार पर विशेष ध्यान दें।

मीन

लक्ष्य प्राप्ति के लिए सोच समझकर निर्णय लेंगे तो सफलता मिलेगी। किसी के साथ बातचीत व व्यवहार में सर्तक रहें। अपनी छवि को संभालें, भाषा में अप्रत्यशित परेशानी अथवा बाधा हो सकती है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए टीम वर्क एंव सहयोग पर ध्यान देवें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

यूसीसीआईः 59वां स्थापना दिवस

नौ उद्यमियों को एक्सीलेंस अवार्ड

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री का 59वां स्थापना दिवस समारोह गत दिनों यूसीसीआई भवन के पीपी सिंघल ऑडिटोरियम में हुआ। इसमें आरआर केबल लिमिटेड के प्रबंध निदेशक गोपाल काबरा के मुख्य अतिथ्यि में 9 सर्वश्रेष्ठ उद्यमियों को यूसीसीआई एक्सीलेंस अवार्ड दिया गया। एक्सीलेंस अवार्ड स्टैंडिंग कमेटी के चेयरपर्सन मनीष गोधा ने बताया कि अवार्ड के लिए चयन छह सदस्यीय निर्णायक कमेटी ने किया। समारोह की अध्यक्षता प्रमुख उद्योगपति सलिल सिंघल ने की।

इन्हें मिला सम्मान : ■ पायरो टेक टेम्पसंस मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड लार्ज एंटरप्राइज में आरएसडब्ल्यूएम लिमिटेड को। ■ आर्कगेट मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड मीडियम एंटरप्राइज में द वुडन स्ट्रीट फर्नीचर्स प्राइवेट लिमिटेड को ■ सिंघल फाउंडेशन मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड स्माल एंटरप्राइज में एनएम इंडिया बायो प्राइवेट लिमिटेड को ■ वंडर सीमेंट मैन्यूफैक्चरिंग अवार्ड माइक्रो एंटरप्राइज में एडविट लिफ्ट्स एंड ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड को ■ हारमनी मेवाड़ सर्विसेज अवार्ड लार्ज एंटरप्राइज में ई-कनेक्ट सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड को ■ जीआर अग्रवाल सर्विसेज अवार्ड मीडियम एंटरप्राइज में वर्बो लैब्स लैंगवेजेस प्राइवेट लिमिटेड को ■ डॉ. अजय मुर्डिया इंदिरा आइवीएफ सर्विसेज अवार्ड स्माल एंटरप्राइज में पीयर टू पीयर एचआर सर्विसेज को ■ वेंदाता हिन्दुस्तान जिंक सीएसआर अवार्ड आदित्य सीमेंट वर्क्स (यूनिट आफ अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड) को ■ पीपी सिंघल सोशल एंटरप्राइज अवार्ड समर्थक प्रोड्यूस कम्पनी प्रा लि को ।

डॉ. फलेविया को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाउदी बोहरा कम्युनिटी, बोहरा यूथ संस्थान, इंस्टीट्यूट ऑफ इस्लामिक स्टडीज और सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसायटी एंड सेक्युलरिज्म की ओर से इस बार डॉ. असगर अली इंजीनियर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड मुंबई हाईकोर्ट की एडवोकेट एवं महिला कार्यकर्ता डॉ. फलेविया एंग्निस को प्रदान किया गया। समारोह में डॉ. फलेविया ने महिला अधिकार आंदोलन एवं न्यायिक सुधार विषय पर विचार व्यक्त किए। सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाउदी बोहरा कम्युनिटी के चेयरमैन कमांडद मंसूर अली बोहरा ने बताया कि यह अवार्ड समाज सेवा, मानवाधिकार, सामाजिक एवं साम्प्रदायिक सौहाद्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है। समारोह की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुधा चौधरी ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. सरवत खान थी। संचालन अनीस मियाजी ने किया। इस अवसर पर सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्युनिटी के संरक्षक आबिद अदीब, दाऊदी बोहरा जमाअत के अध्यक्ष अब्बास अली, सचिव जाकिर पंसारी, बोहरा यूथ संस्थान के सचिव युसूफ आरजी समेत शहर के गणमान्य नागरिक व सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे।

डॉ. गायत्री की पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने सामुदायिक व्यवहारिक विज्ञान महाविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग की प्रोफेसर डॉ. गायत्री तिवारी द्वारा लिखित पुस्तक मनन: मन की गरिमा तक के विमोचन किया। उन्होंने कहा कि जीवन के अनुभवों को जीना और फिर उन्हें मस्तिष्क पटल के रास्ते से मनन चिंतन करते हुए सशक्त लेखनी द्वारा जनमानस के हृदय पटल पर अंकित करना एक विरली विधा है। गायत्री तिवारी ने स्वयं के माता पिता को नमन करते हुए उनकी परवरिश के दौरान हुए बीजारोपण को सृजन का मूलाधार बताया। डॉ. मधु अग्रवाल ने कहा कि लेखिका की लेखनी की धार इसलिए पैनी है कि वे कथनी और करनी में अंतर नहीं रखती। रागिनी शर्मा व डॉ. कुंजन आचार्य ने पुस्तक के बारे में विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता डॉ. मंजु चतुर्वेदी ने की।

डॉ. प्रदीप का सम्मान

उदयपुर। भारतीय जीवन बीमा निगम डीएम एलीट क्लब गांधीनगर द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में शिक्षाविद् और लाफ्टर गुरु डॉ. प्रदीप कुमावत का अभिनंदन किया गया। उन्हें भारतीय जीवन बीमा निगम के मंडल प्रबंधक मधुकर अस्थाना ने रजत पट्टिका पुष्प गुच्छ देकर अभिनंदन किया गया।

सीआईआई के नए प्रदेश अध्यक्ष बने अरुण

उदयपुर। अरुण मिश्रा और संजय अग्रवाल को वर्ष 2024-25 के लिए भारतीय उद्योग परिसंघ सीआईआई राजस्थान के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया है। अरुण मिश्रा जिंक बिजनेस वेदांता के सीईओ हैं और हिन्दुस्तान जिंक का नेतृत्व कर रहे हैं। संजय अग्रवाल एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ हैं।

विश्व इंजीनियरिंग दिवस मनाया

उदयपुर। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया उदयपुर लोकल सेंटर की ओर से गत दिनों विश्व इंजीनियरिंग दिवस मनाया गया। मुख्य वक्ता अमन जैन सहायक प्रोफेसर सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय ने कहा कि दुनिया अभूतपूर्व जलवायु परिवर्तन, संसाधन की कमी और पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों का सामना कर रही है। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. करुणेश सक्सेना कुलपति संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा ने ग्रीन बिल्डिंग, नाभिकीय ऊर्जा पर बोलते हुए कहा कि देश के विकास में परमाणु ऊर्जा प्रमुख भूमिका निभाएगी। इस अवसर पर अभियांत्रिकी के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने पर डॉ. मयंक पटेल, डॉ. संगीता चौधरी, डॉ. हिना ओझा, विमला डांगी, डॉ. सचिन शर्मा, डॉ. गौरव पुरोहित, धीरज सोनी, मोनिका शर्मा, डॉ. कपिल पारीख, कोमल पालीवाल, डॉ. एन.एल. पंवार, डॉ. कल्पना जैन का सम्मान किया गया।

विधायक मीणा व डांगी का सम्मान

उदयपुर। जय हनुमान रामचरित मानस प्रचार समिति एवं बीइंग मानव सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों अशोका पैलेस में नवनिर्वाचित विधायक फूलसिंह मीणा उदयपुर ग्रामीण व पुष्करलाल डांगी मावली का सम्मान किया गया। आयोजन के मुख्य समन्वयक कुंवर विजयसिंह कच्छवाहा ने बताया कि मुख्य अतिथि निर्मल पंडित थे। अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी ने की। विशिष्ट अतिथि बीइंग मानव सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमैन मुकेश माधवानी, श्याम एस. सिंघवी, कमलेन्द्र सिंह पंवार, डॉ. ओपी महात्मा व हिम्मतसिंह देवड़ा थे। जय हनुमान रामचरित मानस प्रचार समिति के संस्थापक पं. सत्यनारायण चौबीसा, मुकेश माधवानी व नीलेश चौबीसा ने विधायकों व अतिथियों का पगड़ी शॉल व उपरणा ओढ़ाकर सम्मान किया।

साधिकाओं को नारी शक्ति सम्मान

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर नारायण सेवा संस्थान में कार्यरत महिला साधिकाओं को निदेशक वंदना अग्रवाल ने नारी शक्ति सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महिलाएं आज हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर अपना योगदान दे रही हैं। हमें अपने को पुरुषों से कम आंकने के भाव त्यागने चाहिए। वंदना पिछले दो दशक से नारी उत्थान के क्षेत्र में अहम कार्य कर रही हैं।

डॉ. नीलमणि बनी कैंब्रिज एंबेसडर

उदयपुर। रॉकवुड्स इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. वसुधा नीलमणि का चयन दक्षिण एशिया के कैंब्रिज एंबेसडरों में किया गया है। यह घोषणा गोवा में दो दिन के कैंब्रिज साउथ एशिया स्कूल सम्मेलन में की गई है। निदेशक डॉ. दीपक शर्मा और विद्यालय के स्टाफ ने डॉ. नीलमणि को उपलब्धि की बधाई देते हुए कहा कि यह हमारे स्कूल के लिए गौरव का क्षण है।

'उम्मीदों के दीये' का विमोचन

डूंगरपुर। कवयित्री प्रतिज्ञा भट्ट के गीत संग्रह उम्मीदों के दीये का विमोचन श्री हरि मंदिर साबला में जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, बेणेश्वर पीठाधीश्वर गोस्वामी महंत अच्युतानंद महाराज एवं कथा मर्मज्ञ आचार्य पं. कमलेश शास्त्री ने किया। संग्रह का प्रकाशन राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से किया गया है। इसमें समाज, जीवन और परिवेश के विभिन्न अनुभवों तथा उत्प्रेरक आयमों पर 71 गीत समाहित हैं। इस अवसर पर मावजी फाउंडेशन के अध्यक्ष अशोक पंड्या, साहित्यकार नयनेश जानी, डॉ. मालिनी काले, सतीश आचार्य, देवराम साद, मृदुल पुरोहित, राजेन्द्र पानेरी, डॉ. गणेश निनामा, योगिता निनामा, ओमप्रकाश काबरा, देवीलाल जोशी भी उपस्थित थे।

65 विद्यार्थियों का सम्मान

उदयपुर। सिटी पैलेस में जनाना महल के लक्ष्मी चौक में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का 40वां वार्षिक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। भामाशाह सम्मान के लिए 15 तथा महाराणा फतहसिंह सम्मान के लिए 39 विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र, सम्मान राशि का चेक और मेडल प्रदान किया। फाउण्डेशन के ट्रस्टी डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने समारोह का शुभारंभ किया। महाराणा मेवाड़ विद्या मंदिर की छात्रा मोहलक्षिका ने अतिथियों का आभार जताया।

प्रो. सारंगदेवोत को बेस्ट वाइस चांसलर सम्मान

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत को यूनिवर्सिटी मलेशिया केलंतन, मलेशिया और डीएचएस फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बेस्ट वाइस चांसलर से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान शिक्षा में नवीन पद्धतियों और नवाचारों का अन्वेषण कर उनके संवर्धन में अनुपम अवदान हेतु प्रदान किया गया।

भगोरा कार्यकारी समिति में सदस्य मनोनीत

डूंगरपुर। ताराचंद भगोरा को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की अनुशंषा पर आदिवासी कांग्रेस मेंराष्ट्रीय कार्यसमिति का सदस्य मनोनीत किया गया है।

विज्ञान दिवस मनाया

उदयपुर। विज्ञान समिति में गत दिनों राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में नोबेल पुरस्कार प्राप्त भौतिक विज्ञानी सर चंद्रशेखर वेंटकरमन को श्रद्धांजलि अर्पण के साथ विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान को याद किया गया। अनकी रमन प्रभाव खोज विज्ञान के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता थी। उन्हें 1930 में इसके लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया। उन्हीं की स्मृति में प्रतिवर्ष 28 फरवरी को विज्ञान दिवस मनाया जाता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक ताराचंद जैन थे। इस अवसर पर चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा द्वारा रमन प्रभाव पर निर्मित सूक्ष्म पुस्तिका का भी अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

डॉ. कमलेश ने संभाला पदभार

उदयपुर। राजस्थान सूचना एवं जनसम्पर्क सेवा के वरिष्ठ अधिकारी संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने उदयपुर के सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में कार्यभार संभाल लिया। वे जयपुर से स्थानांतरित होकर आए हैं। जनसम्पर्क सेवा वर्ष 2005 बैच के अधिकारी डॉ. शर्मा उदयपुर संभाग मुख्यालय सहित डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ जिलों में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग कार्यालयों में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। कार्यभार ग्रहण करने के दौरान उप निदेशक गौरीकांत शर्मा, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी विनय सोमपुरा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी वाचस्पति देराश्री मौजूद थे। **पंड्या ने भी कार्यभार संभाला:** सहायक जनसम्पर्क अधिकारी जयेश पंड्या ने भी कार्यभार संभाला। मूल रूप से उदयपुर जिले के ऋषभदेव क्षेत्र निवासी पंड्या पूर्व में स्वतंत्र पत्रकार के रूप में कार्यकर चुके हैं।

वरिष्ठजन सम्मान

उदयपुर। साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा एवं तारा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 75 वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया। समारोह में तारा संस्थान की व अध्यक्ष कल्पना गोयल, सचिव दीपेश मित्तल तथा साहित्य मंडल के अध्यक्ष पं. मदनमोहन शर्मा, डॉ. श्रीकृष्ण शरद, डॉ. ओंकार त्रिपाठी (दिल्ली), वसंत जमशेदपुरी, सुनीता शर्मा (गुरुग्राम), प्रो. संतोष यादव (जयपुर) उपस्थित रहे।

मेरा खून तिरंगा, मरते दम तक कांग्रेस में: व्यास

उदयपुर। लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस नेताओं के भाजपा में जाने के सिलसिले के बीच पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास मीडिया से मुखातिब हुई। उन्होंने कहा कि जिसे जाना हो वो जाए, लेकिन समझना चाहिए कि वे गलती कर रहे हैं। मेरा खून लाल नहीं, तिरंगा (कांग्रेस ध्वज) है। डॉ. व्यास ने कहा कि कांग्रेस में जो कुछ हो रहा है, उससे मन दुखी है, लेकिन मरते दम तक कांग्रेस में रहूंगी। उन्होंने कहा पीएम नरेन्द्र मोदी ने पहले चुनाव में कहा कि हर नागरिक के खाते में रुपए आएंगे। आज तक किसी को एक रुपया भी नहीं मिला। किसानों से कहा था कि न्यूनतम समर्थन दर मिल जाएगी। ऐसा भी नहीं हुआ।

तायलिया को राइजिंग स्टार अवार्ड

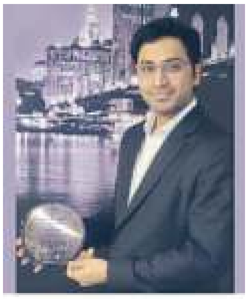

उदयपुर। इकोन ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर शुभम तायलिया को भारतीय हैबिटेट सेंटर, दिल्ली में राइजिंग स्टार अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी असाधारण यात्रा का परिणाम है, जिसमें उन्होंने इकोन को बिल्डिंग मटेरियल के क्षेत्र में एक स्थानीय उद्यम से शक्तिशाली वैश्विक उद्यम में स्थापित किया। उनके मेंटर और पिता डॉ. जे.के. तायलिया ने 25 साल पहले इकोन की स्थापना की थी। अवार्ड कार्यक्रम में पूर्व में टाटा, आदित्य और डनलप जैसे बड़े उद्योगों को सम्मानित किया जा चुका है। इसमें इकोन की उपस्थिति गौरव की बात है।

लीलेरा वैष्णोदेवी धाम पर ज्योत स्थापित

उदयपुर। शहर से 18 किमी दूर लीलेरा में अरावली की पहाड़ियों के बीच मां वैष्णोदेवी धाम पर अखंड ज्योति जम्मू कश्मीर के त्रिकुट पर्वत स्थित मां वैष्णवी (वैष्णोदेवी) धाम से लाई गई है। सिंधी समाज और मीरादेवी किशनलाल दरबार ट्रस्ट की अगुवाई में अखंड ज्योति स्थापित की गई। स्थापना ट्रस्ट प्रमुख सुनील खत्री के पिता किशनलाल दरबार और मां मीरादेवी ने मंत्रोच्चार के बीच की। इसके साथ ही मां वैष्णो का दरबार भक्तों के लिए खुल गया।

डीएसपी चेतना को महिला शक्ति काव्य रत्न सम्मान

उदयपुर। पुलिस अधिकारी एवं कवयित्री चेतना भाटी को नेपाल की संस्था शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन की ओर से महिला शक्ति काव्य रत्न सम्मान से नवाजा गया। सीआईडी जोन उदयपुर में पुलिस उपधीक्षक के रूप में पदस्थापित भाटी को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नेपाल की साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला शक्ति कविता प्रतियोगिता 2024 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर यह सम्मान प्रदान किया गया है।

विद्यार्थियों को सुखद भविष्य का आशीर्वाद

उदयपुर। नोबल इंटरनेशनल स्कूल में सीनियर सैकण्डरी परीक्षार्थी विद्यार्थियों के विदाई समारोह में मैनेजिंग डायरेक्टर के.एम. जिंदल व पुष्पा जिंदल ने सुखद भविष्य का आशीर्वाद देते हुए उन्हें उपहार प्रदान किए। प्राचार्य बी.के. कोठारी ने इस अवसर पर पूरे शिक्षण सत्र की गतिविधियों व उपलब्धियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने विद्यालय के गुरुओं के प्रति आदर प्रकट करते हुए अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में रंगारंग प्रस्तुतियों ने अभिभावकों का मन मोह लिया।

लोटस हाईटेक स्थापना दिवस

उदयपुर। विश्वकर्मा जयंती पर प्री-इंजीनियर्ड बिल्डिंग निर्माता लोटस हाईटेक इंडस्ट्रीज ने अपना 17वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज, बड़ी सादड़ी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में किया हुआ अच्छा कर्म ही आगे सद्भाग्य बनता है। इस दौरान संरक्षक भगवतीलाल सुथार ने मुख्य अतिथि का स्वागत और सम्मान किया।

मालावत का सम्मान

उदयपुर। होटल संस्थान दक्षिणी राजस्थान की ओर से देवस्थान आयुक्त वासुदेव मालावत के पदभार ग्रहण करने पर उनका स्वागत कर उदयपुर सहित प्रदेश के धार्मिक पर्यटन पर चर्चा की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष सुभाष सिंह राणावत, सचिव राकेश चौधरी, कोषाध्यक्ष अंबालाल साहू उपस्थित थे।

सामर सहकारिता संयोजक, वया सम्पर्क सहसंयोजक

उदयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी के निर्देश पर विभिन्न प्रकोष्ठों के संयोजक सहसंयोजक मनोनीत हुए। प्रमोद सामर को पुनः सहकारिता प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक मनोनीत किया है। विशेष सम्पर्क प्रकोष्ठ के प्रदेश सहसंयोजक नानालाल वया, व्यावसायिक प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक शरद बंसल एवं प्रवासी प्रकोष्ठ प्रदेश सहसंयोजक कमल पुगलिया को मनोनीत किया है।

एडीएम दीपेन्द्रसिंह ने संभाला पदभार

उदयपुर। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वर्ष 2011 बैच के अधिकारी दीपेन्द्रसिंह राठौड़ ने उदयपुर में अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) का कार्यभार संभालने के बाद कार्यालय का निरीक्षण करते हुए प्रभागों के प्रभारियों से कामकाज संबंधी जानकारी ली।

उदयपुर में नए एसपी योगेश गोयल

उदयपुर। सरकार की प्राथमिकताएं ही पुलिस की प्राथमिकताएं हैं। सरकार की सौ दिवसीय कार्ययोजना में नशे पर लगाम लगाया जाना है। नशे और इसके अवैध कारोबार पर नियंत्रण के प्रयास किए जाएंगे। यह बात उदयपुर के नए पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल ने पिछले दिनों पद भार संभालने के दौरान कही।

'हैप्पीनेस' कार्यक्रम

उदयपुर। इंटरनेशनल हैप्पीनेस डे पर सेंट मैथ्यूज विद्यालय में एकरा काउंसलिंग सेंटर द्वारा मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें डॉ. डॉ. दीपक शर्मा मुख्य अतिथि रहे। एकरा काउंसलिंग सेंटर की प्रभारी मनोविज्ञानी डॉ. मूमल चावड़ा ने हैप्पीनेस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डाला। संचालन उर्वशी वर्मा एवं हुसैना सनवारी ने किया। सेंट मैथ्यूज विद्यालय की निदेशिका ग्लोरी फिलीप ने अतिथियों व संभागियों का आभार व्यक्त किया।

पाठक पीठ

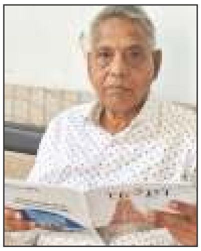

प्रत्यूष का माह मार्च – 24 का अंक मिला। जिसमें महिला सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में योगेश गोयल का आलेख 'आधी दुनिया के खिलाफ बढ़ते अपराध' समाज और सरकार के लिए चेतावनी और चुनौती है। राष्ट्रीय महिला आयोग के आंकड़े देखते हुए समाज और सरकार दोनों को सख्त कदम उठाने होंगे।

खूबीलाल चित्तौड़ा
समाजसेवी

मार्च – 24 के प्रत्यूष अंक में परीक्षार्थी बच्चों के लिए 'परीक्षा तनाव नहीं, उल्लास का अवसर' आलेख निश्चित रूप से सामयिक मार्गदर्शन था। अभिभावकों को चाहिए कि वे पढ़ाई, परीक्षा अथवा प्रशिक्षण को लेकर अनुचित दबाव न बनाएं। उनके सहयोगी बनें।

डॉ. एस.वी. सिंह,
संयुक्त निदेशक एवं प्राचार्य,
जे.आर. शर्मा महाविद्यालय, ऋषभदेव

'प्रत्यूष' पत्रिका वर्षों से नियमित मिल रही है। परिवार के हर सदस्य की रूचि अनुसार इसमें सामग्री होती है। कई सम–सामयिक विषयों पर गंभीर चिंतन के आलेख प्रभावित करने वाले होते हैं। मार्च के अंक में केन्द्रीय एवं राजस्थान के बजट को लेकर विश्लेषण अच्छा था।

रोहित पांडे,
चेयरमैन,
पांडे मिनरल्स

मार्च के प्रत्यूष का कवर पृष्ठ बहुत ही सुन्दर बन पड़ा। इस सम्बंध में मनीष उपाध्याय का बहुरंगी आलेख भी भरपूर जानकारी देने वाला था। ओम पाल ने पृष्ठ 36 पर जो प्रश्न उठाया है, उस तरफ भी समाज का चिंतन जरूरी है।

प्रेममोहन अग्रवाल,
डायरेक्टर
भारत ट्रेडर्स

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री राजेन्द्र जी पंचोली (पूर्व सरपंच वरदा-डूंगरपुर) का 7 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी, पुत्र रितेश व रोमल पंचोली, पुत्री श्रीमती मीतू दोषी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती भगवतीदेवी जी अग्रवाल धर्मपत्नी स्व. जमनालाल जी (कानूंगा) का 9 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र अनिल व सुनील कानूंगा, पुत्री श्रीमती अनिता खेतावत, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्रियों व देवर-देवरानियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती तुलसी बाई धर्मपत्नी स्व. मोहनलाल जी संगावत का 10 मार्च को देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोकमग्न पुत्र हरीश, महेन्द्र व भूपेन्द्र संगावत, पुत्रियां गुणमाला सिपरिया, पुष्पा जांगड़ा व सुशीला सिंघवी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व देवर-देवरानी का भरपूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। सुश्री नयना कुंवर का 11 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त दादा-दादी एडवोकेट राव रतनसिंह-उषाकुंवर, माता-पिता सोनाली कुंवर-ले. कर्नल सुरेन्द्रसिंह, भ्राता दिव्यांश सिंह, जयदेवसिंह, जयवीरसिंह, रणजयसिंह व बहिन सुश्री दक्षायनी सिंह सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती देऊबाई पत्नी स्व. नाथूलाल जी मेघवाल (बड़ी) का 3 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र मनोहर व मोड़ीलाल तथा पुत्री श्रीमती नर्बदा व पुष्पा तथा पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री हनुमंत कुमार जी तलेसरा का 17 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र नक्षत्र, मुकेश व दिलीप तलेसरा तथा पुत्रियां श्रीमती सुधा जैन, कल्पना चपलोत सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री अवंतिलाल जी मेहता बाड़ी वाले का 18 फरवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र सुरेन्द्र व गिरीश मेहता, पुत्री श्रीमती जयवंता लसोड़, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्री सहित संपन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर समाजसेवी श्रीचंद जी डेम्बला का 16 फरवरी को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र नरेन्द्र व संजय डेम्बला, पुत्रियां सीमा, संध्या व भूमिका तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का वृहद एवं संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। पूर्व उप निदेशक (आयुर्वेद) श्री दिलखुश सिंह जी सिंघवी का 6 मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल जीवन संगिनी श्रीमती चन्द्रकला देवी, पुत्र दिशांत, पुत्री सुरभि व मयूरी, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री, भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री दूल्हेसिंह जी सरूपरिया का 16 फरवरी को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र राजकुमार, पुत्री श्रीमती मधु लोढ़ा, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री सहित भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। समाजसेवी श्री प्रकाश जी सुहालका का 29 फरवरी को आकस्मिक देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती चंचल देवी, पुत्र नवनीत सुहालका, पुत्री श्रीमती रेणु, हीना, पौत्र, दोहित्र-दोहित्री सहित भरापूरा रामड़िया परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती पुष्पा जी देवपुरा धर्मपत्नी स्व. सोहन जी देवपुरा (सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता) का 11 फरवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र डॉ. मुकेश देवपुरा, पुत्री श्रीमती मावधी लढ़ा, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्रियों, भाई-भतीजों, देवर-देवरानियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। 'अम्बर का दर्शन' साप्ताहिक पत्र के प्रकाशक-सम्पादक भंवर मेनारिया अम्बर के पिता श्री जमनाशंकर जी का 12 मार्च को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती बाई, पुत्र अम्बर, सोहन, कैलाश व चन्द्रशेखर, पुत्रियां सरस्वती व कृष्णा देवी तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। पत्रकारों व सामाजिक संगठनों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

उदयपुर। समाजसेवी एवं उद्यमी हाजी सिराज अहमद सा (सुपुत्र हाजी मोहम्मद हुसैन) का 13 मार्च को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे गमजदा पुत्र सरफराज नवाज एवं मेहराज नवाज, पुत्री अमरीन व नाजीया तथा भाई-भतीजों, पोते-पोतियों, दोहिते-दोहितियों का भरापूरा संदल खानदान छोड़ गए हैं।

Shyam Siroya
CMD
94141-56656

With Best Compliments

Rohit Siroya
Director
98280-44777

Kalpana Minerals & Chemicals

MINE OWNER

Mfg. of High grade micronised
Calcium Carbonate
Talc, Dolomite & Chinaclay Power

"AANGAN" 7-New Fatehpura, Udaipur - 313 001 (Rajasthan)
Ph.: 0294-2421636, (M) 9414156656

गणपतनाथ चौहान,
डायरेक्टर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

पार्श्वनाथ ड्रीम होम्स

QUALITY AND LUXURY FLATS

जीवन के सुंदर पलों को बिताएं
पार्श्वनाथ ड्रीम होम्स में

1 BHK | 2 BHK

फ्लैट मात्र 15.61 लाख से शुरू

+91 8875615888
+91 8875615999

Ganpati Enclave
NH-76 Debari Chauraha
Udaipur Rajasthan

Rohit Panday
CMD
Mobile: 98280 74221

PANDAY GROUP
Pure Perfection Since 1952

PANDAY MINERALS

Mine Owners & Manufacturers

Deals in

- Soap Stone • Talc • Chemosil-3
- Dolomite • Calcite • Quartz
- Feldspar • Marble • Granite

Panday Estate, Outside Surajpole,
Udaipur - 313001 (Raj.)
91-294-2524861, 2425358, 2417365
pandaygroup@gmail.com
www.pandayminerals.com

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 21 अंक 12, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2024-26 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001